नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 020
दि. 20.10.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

नीरव मोदी का सनसनीखेज दावा: प्रत्यर्पण मामले में अगले महीने होगा बड़ा खुलासा

(जीएनएस)। लंदन। भगोड़े भारतीय व्यवसायी नीरव मोदी ने ब्रिटेन की रॉयल कोर्ट्स ऑफ जस्टिस में सनसनीखेज बयान देते हुए कहा है कि अगले महीने उनके भारतीय प्रत्यर्पण मामले की सुनवाई में 'अप्रत्याशित और चौंकाने वाले घटनाक्रम' सामने आएंगे। 6,498 करोड़ रुपये के पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) धोखाधड़ी मामले में आरोपी नीरव मोदी इस समय लंदन की जेल में बंद हैं और भारत प्रत्यर्पण के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं। नीरव मोदी ने अदालत में खुद को 'व्यक्तिगत रूप से वादी' बताते हुए जेल से ही अपने हस्तलिखित नोट पढ़े। इस दौरान उन्होंने कहा कि उनकी दृष्टि कमजोर है और जेल में कंप्यूटर तक उनकी पहुंच नहीं है, जिससे कानूनी प्रक्रिया उनके लिए असमान और अनुचित साबित हो रही है। मोदी ने उम्मीद जताई कि नवंबर के अंत में होने वाली सुनवाई में अदालत नए सबूत स्वीकार करेगी, और इससे या तो उन्हें बरी किया जा सकता है या जमानत मिलने की संभावना है।

ब्रिटेन की क्राउन प्रॉसिक्यूशन सर्विस ने पुष्टि की कि नीरव मोदी ने अपनी प्रत्यर्पण अपील फिर से खोलने के लिए औपचारिक आवेदन दायर किया है। भारत सरकार ने इस पर अपना जवाब पहले ही जमा कर दिया है। हालांकि, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश साइमन टिंकलर ने तकनीकी या चिकित्सीय आधार पर मुकदमे पर रोक लगाने से इनकार कर दिया और जेल अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे एक सप्ताह के भीतर मोदी को कंप्यूटर समेत सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान करें।

नीरव मोदी और उनके मामा मेहुल चोकसी पर आरोप है कि उन्होंने पीएनबी को धोखा देकर बिना मंजूरी या गारंटी के फर्जी 'लेटर्स ऑफ़ अंडरटेकिंग' हासिल किए। इस घोटाले के कारण पीएनबी को एसबीआई (मॉरीशस और फ्रैंकफर्ट), इलाहाबाद बैंक (हांगकांग) और अन्य अंतरराष्ट्रीय बैंकों को भुगतान करना पड़ा, जबकि मोदी की कंपनियां ऋण चुकाने में विफल रहीं। मुंबई की एक अदालत ने 2020 में उन्हें 'भगोड़ा आर्थिक अपराधी' घोषित किया और उनकी संपत्ति जब्त करने का आदेश भी दिया।

नीरव मोदी मार्च 2019 से लंदन की जेल में हैं। उनकी जमानत की कई कोशिशें पहले ही खारिज हो चुकी हैं, क्योंकि ब्रिटिश न्यायालय ने विदेश भागने के खतरे का हवाला दिया था। इस हाई-प्रोफाइल कानूनी लड़ाई में अगले महीने की सुनवाई को लेकर देश-विदेश की मीडिया और वित्तीय जगत की निगाहें टिकी हुई हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि यदि अदालत मोदी के नए सबूत स्वीकार करती है, तो यह मामले में नया मोड़ साबित हो सकता है और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सुरक्षा और प्रत्यर्पण कानूनों पर भी असर डाल सकता है।

यह मामला भारत के इतिहास के सबसे बड़े बैंकिंग घोटालों में से एक है और नीरव मोदी का दावा, उनके प्रत्यर्पण की प्रक्रिया में आने वाले बदलाव और संभावित खुलासे, वैश्विक मीडिया और निवेशकों के लिए चर्चा का विषय बना हुआ है।

अमेरिकी सेना ने कैरिबियन में अर्ध-पनडुब्बी नष्ट कर फेंटेनाइल तस्करी को रोका, ट्रंप ने की कार्रवाई की पुष्टि

(जीएनएस)। वॉशिंगटन/कैरेबियन। अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की है कि अमेरिकी सेना ने कैरिबियन सागर में सक्रिय एक अर्ध-पनडुब्बी को नष्ट कर दिया है, जो भारी मात्रा में फेंटेनाइल और अन्य अवैध नशीली दवाओं के साथ अमेरिकी तट की ओर बढ़ रही थी। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा कि यह कार्रवाई एक ऐसे मार्ग पर की गई, जिसे ड्रग तस्करी के लिए कुख्यात माना जाता है।

अमेरिकी खुफिया एजेंसियों की रिपोर्ट के अनुसार, यह अर्ध-पनडुब्बी अमेरिका में घातक ड्रग्स पहुंचाने की कोशिश में थी। ऑपरेशन के दौरान दो संदिग्धों की मौत हुई और दो अन्य को अमेरिकी नौसेना ने बचाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाया। ये दोनों संदिग्ध इक्वाडोर और कोलंबिया के नागरिक बताए गए हैं, जिन्हें उनके देश लौटाकर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। ट्रंप ने कहा कि यदि यह जहाज अमेरिका तक पहुंच जाता, तो कम से कम 25,000 अमेरिकी नागरिकों की जान खतरे में पड़ती। उन्होंने इसे 'नार्कोटेररिज्म' करार दिया और स्पष्ट किया कि उनके कार्यकाल में ड्रग कार्टेल के खिलाफ जमीन और समुद्र दोनों पर कार्रवाई की जाएगी।

अर्ध-पनडुब्बी को नष्ट करने का वीडियो फुटेज अमेरिकी रक्षा विभाग ने जारी किया, जिसमें देखा जा सकता है कि जहाज सतह के करीब चल रहा था और पीछे से विस्फोटों की श्रृंखला ने इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। यह सितंबर से अब तक छठा ऑपरेशन था, जिसमें ड्रग ले जाने वाले पनडुब्बीनुमा जहाज को निशाना बनाया गया। पिछले हमलों में कुल 27 लोगों की मौत हुई थी, जिससे अब मृतकों की संख्या 29 तक पहुँच गई है। इस ऑपरेशन को लेकर कानूनी विशेषज्ञों और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा विश्लेषकों में बहस तेज हो गई है, क्योंकि अमेरिकी प्रशासन इसे 9/11 के बाद की आतंकवाद-रोधी कार्रवाइयों जैसी 'सशस्त्र संघर्ष की स्थिति' के तहत अंजाम दे रहा है। इसके साथ ही कैरिबियन क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य शक्ति में बढ़ोतरी की गई है, जिसमें मिसाइल विध्वंसक युद्धपोत, F-35 लड़ाकू विमान, परमाणु पनडुब्बी और लगभग 6,500 सैनिकों की तैनाती शामिल है।

ट्रंप ने स्पष्ट किया कि अमेरिका किसी भी कीमत पर ड्रग कार्टेल को बख्शने वाला नहीं है और यह अभियान लंबे समय तक जारी रहेगा। फेंटेनाइल की तस्करी अमेरिका के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा का गंभीर खतरा मानी जा रही है, और इस सैन्य अभियान के प्रभावों का विश्लेषण लैटिन अमेरिकी देशों और क्षेत्रीय भू-राजनीतिक समीकरणों पर नजर रखकर किया जा रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस ऑपरेशन से अमेरिका ने ड्रग तस्करी के खतरनाक नेटवर्क पर कड़ा संदेश भेजा है और भविष्य में ऐसे प्रयासों को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को और मजबूत किया जाएगा। वहीं, कैरिबियन और लैटिन अमेरिका में सुरक्षा और तस्करी रोकने के प्रयासों में भी तेजी आ सकती है, क्योंकि अमेरिकी सैन्य कार्रवाई ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी ड्रग कार्टेल अमेरिकी सीमा को चुनौती नहीं दे सकता।

यह घटना अमेरिका की अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति और ड्रग तस्करी रोकने के प्रयासों को वैश्विक स्तर पर फिर से केंद्रित कर देती है और दिखाती है कि अमेरिकी प्रशासन ड्रग कार्टेल्स के खिलाफ कठोर और सशक्त कार्रवाई करने के लिए हर संभव साधन अपनाने को तैयार है।

DRI का ऑपरेशन फायर ट्रेल: तूतीकोरिन पोर्ट पर चीन से आए 83,520 अवैध पटाखे जब्त, 4 गिरफ्तार

(जीएनएस)। तूतीकोरिन। दिवाली से पहले राजस्व खुफिया निदेशालय (DRI) ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए तूतीकोरिन पोर्ट पर चीन से अवैध रूप से आयात किए गए 83,520 पटाखे जब्त किए हैं। इन पटाखों की कुल कीमत लगभग 5.01 करोड़ रुपए बताई जा रही है। इस कार्रवाई के तहत चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें से दो मुंबई निवासी हैं। DRI ने इस अभियान को 'ऑपरेशन फायर ट्रेल' का नाम दिया है। DRI के सूत्रों के अनुसार, ये पटाखे इंजीनियरिंग गुड्स के नाम पर गलत तरीके से घोषित कर कंटेनरों में छिपाकर लाए गए थे। दो कंटेनरों में रखी गई इस बड़ी खेप में चीन से आए चाइनीज़ फायर क्रैकर्स को कवर कार्गो के रूप में सिलिकॉन सीलेंट गन के साथ रखा गया था। अधिकारियों ने बताया कि इस पूरी कार्रवाई में 14 से 18 अक्टूबर 2025 तक लगातार जांच और निगरानी के बाद इन पटाखों को जब्त किया गया।

सुरक्षा और जांच की प्रक्रिया

ऑपरेशन के दौरान DRI अधिकारियों ने पहले आयातक को तूतीकोरिन से गिरफ्तार किया। इसके बाद विस्तृत जांच के बाद चेन्नई और तूतीकोरिन से तीन अन्य संदिग्धों को पकड़ा गया। सभी चारों को अदालत में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। तमिलनाडु पुलिस ने पुष्टि की कि ये प्रतिबंधित पटाखे मालवाहक जहाज के कंटेनरों में छिपाकर लाए गए थे। वहीं, मुंबई में एक और संदिग्ध की तलाश जारी है।

अवैध पटाखों का भारत में आयात प्रतिबंध

भारत में पटाखों का आयात पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसके लिए DGFT (विदेश व्यापार महानिदेशालय) और PESO (Petroleum and Explosives Safety Organisation) से विशेष लाइसेंस लेना आवश्यक होता है। बिना अनुमति के ऐसे विस्फोटक पदार्थों का आयात और तस्करी न केवल विदेश व्यापार कानून का उल्लंघन है बल्कि यह जनता की सुरक्षा, पोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और व्यापक सार्वजनिक सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा बन सकता है।

DRI की प्रतिबद्धता

DRI ने इस कार्रवाई के माध्यम से स्पष्ट किया है कि वह देश की सुरक्षा और जनता की जान-माल की सुरक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। अधिकारी यह भी बता रहे हैं कि भविष्य में भी अवैध आयात और पटाखों की तस्करी पर सख्त निगरानी और कार्रवाई जारी रहेगी। इस अभियान से यह संदेश भी गया है कि कोई भी तस्कर नियम और कानूनों को नजरअंदाज कर सुरक्षित आयात की कोशिश नहीं कर सकता, और इसके लिए प्रशासन हर स्तर पर सतर्क और सक्रिय है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस कार्रवाई से दिवाली के त्यौहार पर जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी और अवैध पटाखों की तस्करी रोकने के प्रयासों को मजबूती मिलेगी। इसके साथ ही समुद्री और बंदरगाह सुरक्षा के उपाय भी और कड़े किए जाएंगे, ताकि भविष्य में इस तरह की अवैध गतिविधियों को रोका जा सके।

दिल्ली में दिवाली पर हवा हुई जहरीली, आनंद विहार में AQI 414 पार, 35 इलाकों में प्रदूषण का

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देशभर में दिवाली का त्योहार धूमधाम से मनाया जा रहा है, लेकिन राजधानी दिल्ली में इस पर्व के ठीक पहले ही वायु प्रदूषण ने खतरनाक स्तर छू लिया है। सोमवार सुबह दिल्ली का औसत AQI 337 दर्ज किया गया, जबकि आनंद विहार में यह 414 तक पहुंच गया। बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) स्टेज-II लागू कर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, दिल्ली-एनसीआर में दिवाली से पहले ही हवा में प्रदूषण का स्तर खतरनाक हो गया है। रविवार शाम से ही अधिकांश इलाकों में AQI 300 के ऊपर पहुंच गया था, जो 'बेहद खराब' श्रेणी में आता है। सोमवार सुबह 8 बजे दिल्ली के आनंद विहार का AQI सबसे ज्यादा 414 रहा, जबकि वजीरपुर में 407 दर्ज किया गया। दूसरी ओर, श्री अरबिंदो मार्ग में सबसे कम AQI 217 दर्ज किया गया। दिल्ली के करीब 35 इलाकों में प्रदूषण का रेड अलर्ट जारी किया गया है। इनमें से 32 इलाके बहुत खराब श्रेणी में हैं, जहां AQI 300 से 400 के बीच दर्ज किया गया। वहीं, आनंद विहार और वजीरपुर में प्रदूषण गंभीर श्रेणी में पहुंच गया है। राजधानी में कोहरे और धूल-मिट्टी की परत ने भी हालात को और जटिल बना दिया है। दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में AQI की स्थिति इस प्रकार रही: अलीपुर 319, शादीपुर 309, NSIT द्वारका 367, ITO 351, सिरी फोर्ट 362, मंदिर मार्ग 344, आरके पुरम 375, पंजाबी बाग 383, आया नगर 305, नॉर्थ कैंपस 327, लोधी रोड 319, CRRI मथुरा रोड 327, पूडा 371, IGI एयरपोर्ट 297, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम 355, नेहरू नगर 388, द्वारका सेक्टर-8 354, पपड़गंज 367, डॉक्टर करनी सिंह शूटिंग रेंज 357, अशोक विहार 389, सोनिया विहार 308, जहांगीरपुरी 387, रोहिणी 368, विवेक विहार 356, मेयर ध्यानचंद स्टेडियम 336, नरेला 305, ओखला फेस-2 363, बवाना 368, मुंडका 303, इहबास दिलशाद गार्डन 327, चांदनी चौक 337 और बुराड़ी क्रॉसिंग 217।

वायु प्रदूषण विशेषज्ञों का कहना है कि दिवाली के दिन होने वाली आतिशबाजी के कारण AQI और अधिक बढ़ने की संभावना है, जिससे राजधानी के लोगों की सेहत पर गंभीर असर पड़ सकता है। श्वसन संबंधी बीमारियों वाले लोग, बच्चे और बुजुर्ग इस समय विशेष सतर्कता बरतें। प्रशासन ने भी लोगों से आग्रह किया है कि बाहर निकलते समय मास्क पहनें, एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करें और लंबे समय तक बाहर रहने से बचें।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने कहा कि GRAP स्टेज-II के तहत कुछ प्रतिबंधात्मक उपाय लागू किए जाएंगे, जैसे कि निर्माण कार्यों पर रोक, भारी वाहनों की आवाजाही सीमित करना और पटाखों के उपयोग पर नियंत्रण। हालांकि, उत्सव के चलते लोग अभी भी पटाखों का उपयोग कर रहे हैं, जिससे प्रदूषण और अधिक बढ़ने की आशंका है। विशेषज्ञों ने लोगों से अपील की है कि दिवाली पर अपने परिवार और समुदाय की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का पालन करें। इस दिवाली पर राजधानी की हवा प्रदूषण के मामले में गंभीर चेतावनी दे रही है, और यह संदेश देती है कि त्योहार की रौनक के बीच सुरक्षा और स्वास्थ्य की प्राथमिकता रखना अत्यंत आवश्यक है।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री ने देशवासियों को दी दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं, स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने का किया आग्रह

(जीएनएस)। नई दिल्ली/लखनऊ। भारत के सबसे बड़े त्योहार दिवाली के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं और साथ ही इस पर्व पर सामाजिक सद्भाव, समृद्धि और सकारात्मकता का संदेश भी साझा किया। प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों से अपील की कि इस दिवाली पर वे स्वदेशी उत्पाद खरीदें, जिससे स्थानीय कारीगरों को समर्थन मिले और 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को मजबूती मिले। उन्होंने ट्विटर के माध्यम से संदेश दिया कि आइए इस त्योहारी सीजन में 140 करोड़ भारतीयों की मेहनत, रचनात्मकता और नवाचार का जश्न मनाएं, और गर्व से कहें कि यह उत्पाद स्वदेशी है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि लोग अपने द्वारा खरीदे गए स्वदेशी उत्पादों की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा करें, ताकि दूसरों को भी प्रेरणा मिल सके। प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहा कि दीपावली केवल दीप जलाने का पर्व नहीं है, बल्कि यह आत्मा में आशा के प्रकाश, समाज में समरसता और राष्ट्र में नवजागरण का प्रतीक है। उन्होंने कामना की कि इस पर्व से हर घर में खुशहाली, सुख-शांति और समृद्धि का संचार हो। मोदी सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत यह प्रयास किया जा रहा है कि घरेलू उत्पादों की खरीद को बढ़ावा मिले और आयात पर निर्भरता कम हो।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी अपने संदेश में दीपावली को सत्य, धर्म और सकारात्मकता की शाश्वत विजय का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि दीपावली केवल दीप जलाने का अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह आत्मा में आशा की किरण जगाने, समाज में सौहार्द और राष्ट्रीय पुनरुत्थान का संकल्प करने का पर्व है। योगी ने सभी नागरिकों से इस पर्व को समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए प्रेरणा के रूप में मनाने का आग्रह किया। देशभर में इस दिवाली पर लोग अपने-अपने घरों और मोहल्लों को दीपों से सजाकर खुशियां बांट रहे हैं। बाजारों में रौनक, रोशनी और सजावट के साथ-साथ स्वदेशी उत्पादों की मांग में भी वृद्धि देखी जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के संदेश से यह पर्व केवल धार्मिक उत्सव नहीं रहकर सामाजिक सद्भाव, आर्थिक समर्थन और राष्ट्रप्रेम का प्रतीक बन गया है।

इस दिवाली ने फिर से यह संदेश दिया कि त्योहारों का महत्व केवल पूजा-पाठ और आनंद में नहीं, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था में सकारात्मक बदलाव लाने, स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहित करने और देशभक्ति की भावना को मजबूत करने में भी है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

कृत्रिम बारिश योजना में खाद्य संकट के जोखिम

दिवाली उत्सव पर प्रतिवर्ष की जाने वाली आतिशबाज़ी से गंभीर वायु प्रदूषण उत्पन्न होता है। इसे कम करने के लिए इस साल दिल्ली सरकार ने दिवाली के अगले दिन कृत्रिम बारिश दके जरिये मौसम का मिज़ाज बदलने की योजना बनाई है, जिससे खरीफ फसलों की कटाई-गहाई और रबी की बुआई पर असर पड़ने की आशंका है, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा साबित हो सकती है।

पिछले छह दशक से देश की खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक खाद्य वितरण प्रणाली को सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार किसानों से धान और गेहूं खरीदती है, जिसमें लगभग 80 प्रतिशत योगदान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के राज्यों का रहा है, जहां अभी अक्तूबर-नवंबर महीने में खरीफ फसलों—धान, ज्वार, बाजरा, मूंग, अरहर, कपास आदि की कटाई-गहाई और रबी फसलों —गेहूं, जौ, चना, सरसों, मसूर, आलू आदि की बुआई चल रही है, जिसके लिए बिना बारिश वाला सूखा मौसम अति आवश्यक है।

निस्संदेह, जब किसान खरीफ फसलों की उपज समेटने और रबी की बुआई में व्यस्त हैं और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के राज्यों की कृषि उपज विपणन मंडियां अनाज से भरी हुई हैं, तब दिल्ली सरकार द्वारा दिवाली के अगले दिन कृत्रिम बारिश करवाने की योजना अव्यावहारिक है जिससे किसान का नुकसान भी हो सकता है। ऐसे समय की जाने वाली कृत्रिम बारिश के चलते किसानों की खरीफ फसल उपज और मंडियों में अनाज की बर्बादी तथा बुआई की गई फसलों के खराब होने की संभावना रहेगी।

उल्लेखनीय है कि सामान्य प्राकृतिक वर्षा तब होती है जब सूरज की गर्मी से नम हवा गर्म और हल्की होकर ऊपर उठती है। ऊपर उठी हुई हवा का दबाव कम हो जाता है और आसमान में एक ऊंचाई पर पहुंचने के बाद वह ठंडी हो जाती है। जब इस हवा में सघनता बढ़ जाती है तो वर्षा की बूंदें बड़ी होकर हवा में देर तक नहीं ठहर पातीं और बारिश के रूप में नीचे गिरने लगती हैं। लेकिन कृत्रिम वर्षा करने के लिए सिल्वर आयोडाइड और सूखी बर्फ जैसे ठंडा करने वाले रसायनों का प्रयोग करके कृत्रिम बादल बनाकर वर्षा करवाई जाती है।

मानव-निर्मित गतिविधियों के जरिये कृत्रिम बादल बनाने और फिर उनसे वर्षा कराने की क्रिया को 'क्लाउड सीडिंग' कहा जाता है। हालांकि, क्लाउड सीडिंग के कई फायदे हैं, लेकिन मौसम परिवर्तन की यह तकनीक पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। इसके नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों में जल और वायु प्रदूषण, पारिस्थितिक तंत्र का विघटन, असामान्य मौसम परिवर्तन और मिट्टी व पानी में रसायनों का जमाव शामिल है। इसके उपयोग से सिल्वर आयोडाइड जैसे हानिकारक रसायन हवा, पानी और मिट्टी में मिल सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं, और पड़ोसी क्षेत्रों में वर्षा में कमी या अत्यधिक वर्षा व बाढ़ जैसे दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं। कृत्रिम वर्षा से प्राकृतिक मौसम चक्र बाधित हो सकता है, जिससे अप्रत्याशित सूखा या अति वर्षा की स्थिति बन सकती है और किसानों व पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। मौसम के संतुलन में बदलाव के दीर्घकालिक अवांछित प्रभाव हो सकते हैं, जिन्हें अभी मौसम वैज्ञानिक पूरी तरह समझ नहीं पाए।

राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण लगभग पूरे वर्ष बना रहता है, लेकिन सर्दी के महीनों (अक्तूबर-मार्च) में मानसून की वापसी से वायु गति और तापमान कम होने के कारण पृथ्वी की सतह पर वायु प्रदूषण का घनत्व बढ़ जाता है। पराली जलाने के अलावा, दिल्ली के वायु प्रदूषण के लिए अन्य कारक—वाहनों से निकलने वाला धुआं, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण कार्य से उठने वाली धूल आदि मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। प्रदूषण में पराली जलाने की महीनेवार हिस्सेदारी अलग-अलग होती है। नवंबर में यह लगभग 30 प्रतिशत और बाकी महीनों में मात्र 0–5 प्रतिशत तक सीमित रहती है। अतः वायु प्रदूषण के लिए वाहन, उद्योग और निर्माण कार्य जैसे स्थानीय कारक अधिक जिम्मेदार हो सकते हैं।

भारतीय आत्मा का आलोकित उत्सव दीपावली, मनुष्य का अर्थ ही प्रकाश है

> दीपावली केवल परंपरा नहीं, अस्तित्व की निरंतरता का प्रतीक है। हर युग में, हर परिस्थिति में, जब भी अंधकार गहराता है, मनुष्य अपने भीतर से दीपावली खोज लेता है-कभी प्रेम के रूप में, कभी कला के, कभी करुणा के और कभी कविता के, क्योंकि अंततः मनुष्य का अर्थ ही प्रकाश है-और दीपावली उसी अर्थ की पुनर्स्मृति।

दीपावली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा का आलोकित उत्सव है, अंधकार से संवाद करने की कला है और निराशा के बीच आशा का दीप जलाने का नाम है। हर वर्ष जब कार्तिक अमावस्या आती है, तब समूचा भारत जैसे एक साथ सांस लेता है-धीरे, स्थिर, श्रद्धा से भरा हुआ। गांव की कच्ची गलियां हों या महानगर की ऊंची इमारतें, हर जगह कोई न कोई दीप किसी स्मृति, किसी प्रार्थना, किसी सपने के नाम जलता है। यह रोशनी बाहर जितनी दिखती है, भीतर उतनी ही उतरती है, क्योंकि दीपावली बाहरी उजास से अधिक भीतर के अंधेरे को पहचानने और उसे प्रेमपूर्वक आलोकित करने की प्रक्रिया है।

मिट्टी के दीये का अपना सौंदर्य है। वह भले ही छोटा हो, पर उसका प्रकाश सबसे कोमल और सबसे सच्चा होता है। उसमें मनुष्य का परिश्रम है, धरती की गंध है और आस्था की गर्मी है। वह दीप जब जलता है, तब लगता है जैसे किसी किसान की हथेली, किसी मां के नेत्र, किसी बच्चे की हंसी-सब मिलकर उस लौ को थरथरा रहे हों। यही मिट्टी का दीया हमारे जीवन की सबसे गहरी प्रतीक-कथा कहता है कि जो झुकता है, वही जलता है, जो मिटता है, वही प्रकाशित होता है।

दीपावली का उत्सव केवल लक्ष्मी की आराधना नहीं है, बल्कि श्रम और सौंदर्य, करुणा और स्मृति, उत्सव और साधना का संगम है। इस दिन हर व्यक्ति, चाहे गरीब हो या अमीर, कुछ न कुछ सजाता है-अपना घर, अपना मन या अपनी आशा। यह सजावट केवल भौतिक नहीं, मनोवैज्ञानिक भी है। यह सजाने, संवारने, संजोने का उत्सव है-जैसे हम अपने भीतर के अस्त-व्यस्त भावों को भी दीपों की पंक्तियों में सजा दें। कवियों ने हमेशा दीपावली को प्रकाश और अंधकार के संघर्ष के रूप में देखा है, पर यदि ध्यान से देखें तो यह संघर्ष नहीं, संवाद है। अंधकार प्रकाश का शत्रु नहीं, उसका आवश्यक आधार है। बिना अमावस्या के चांद का अर्थ अधूरा है।

दीप का सौंदर्य तभी खिलता है, जब उसके चारों ओर घना अंधेरा हो। जीवन भी ऐसा ही है। अंधकार हमें प्रकाश का मूल्य सिखाता है, दुख हमें आनंद की गरिमा दिखाता है और हानि हमें प्रेम की गहराई समझाती है। जब सांझ उतरती है और बच्चे पहली फुलझड़ी जलाते हैं तो आकाश में केवल चिंगारियां नहीं उठतीं, वहां हजारों इच्छाएं भी उड़ती हैं। दीपावली का प्रकाश वस्तुतः उन अनगिनत स्वप्नों का प्रतिरूप है, जो मनुष्य के हृदय में सदा जलते रहते हैं। जब चारों ओर दीपों की पंक्तियां थिरक रही होती हैं और हवा में एक अजीब शांति होती है। यह क्षण वह है जब मनुष्य अपने भीतर के ईश्वर से मिलता है-न किसी मूर्ति में, न किसी ग्रंथ में, बल्कि उस छोटी सी लौ में, जो बाहर भी है और भीतर भी।

दीपावली का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग है। किसी के लिए यह संपन्नता का प्रतीक है, किसी के लिए मिलन का और किसी के लिए स्मृति का। बूढ़ी मां जब पुराने दीयों को साफ करती है तो हर दीए में उसे बीते वर्षों की परछाई दिखती है। अब वह दीया जलाती है तो उसमें एक तरह की मौन प्रार्थना होती है कि उजाला केवल घर का न हो, मन का भी हो। साहित्य में दीपावली केवल एक दृश्य नहीं, एक प्रतीक है-प्रकाश का, ज्ञान का, सत्य का। किसी ने इसे राम के अयोध्या लौटने का उत्सव कहा, किसी ने आत्मा की विजय का, किसी ने प्रेम के पुनर्जन्म का, पर सबका सार एक ही रहा-अंधकार से प्रकाश की ओर, भय से विश्वास की ओर, बाह्य से अंतर की ओर यात्रा।

संस्कृति के स्तर पर दीपावली हमें यह सिखाती है कि उत्सव केवल प्रदर्शन नहीं, संवेदना है। यह पर्व हमें जोड़ता है-परिवारों से, पड़ोसियों से और यहां तक कि अजनबियों से भी। एक दीप किसी और के द्वार रख देना, यह बताना है कि हम साथ हैं, हम एक ही प्रकाश में जी रहे हैं। यही भारतीयता का हृदय है-'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' जब रात गहराती है और दीप धीरे-धीरे बुझने लगते हैं, तब भी उनकी लौ की छाया दीवारों पर बनी रहती है। वह छाया एक स्मृति बन जाती है कि उजाला क्षणभंगुर है, पर उसका प्रभाव अनंत। शायद इसी भाव से कवि कहता है-जो दीप जलता है, वह बुझता नहीं, वह हृदय में उतर जाता है।

दीपावली का सबसे गहन अर्थ यही है-भीतर का दीप जलाना। यह भीतर का दीप तब तक नहीं जलता, जब तक हम अहंकार की कालिख न मिटा दें, ईर्ष्या का धुआं न हटाएं और स्वार्थ की ठंडी राख को न झाड़ दें। जब भीतर की सफाई हो जाती है, तब हर मन स्वयं दीप बन जाता है। जैसे हर घर में नहीं, हर आत्मा में दीपावली मनाई जा रही हो। वहां कोई शोर नहीं, कोई आतिशबाजी नहीं-सिर्फ एक धीमी, निर्मल, आत्मीय रोशनी।

वही सच्ची दीपावली है-जो संसार को नहीं, आत्मा को आलोकित करती है। उसी क्षण मनुष्य देवत्व को छू लेता है। दीपावली केवल परंपरा नहीं, अस्तित्व की निरंतरता का प्रतीक है। हर युग में, हर परिस्थिति में, जब भी अंधकार गहराता है, मनुष्य अपने भीतर से दीपावली खोज लेता है-कभी प्रेम के रूप में, कभी कला के, कभी करुणा के और कभी कविता के, क्योंकि अंततः मनुष्य का अर्थ ही प्रकाश है-और दीपावली उसी अर्थ की पुनर्स्मृति।

प्रेरणा

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के पांच जीवन मंत्रः जो अंधकार में भी उजाला दिखा दें

भारत के महान वैज्ञानिक, मिसाइल मैन और देश के 11वें राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन किसी प्रेरणा से कम नहीं था। उनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में एक सामान्य परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने साबित कर दिया कि यदि नीयत सच्ची हो, तो एक साधारण बालक भी आसमान को छू सकता है। वे न केवल विज्ञान के क्षेत्र में बल्कि जीवन दर्शन में भी मार्गदर्शक रहे। उनके विचारों ने अनगिनत युवाओं के हृदय में आशा की ज्वाला जलाई। आज, जब हम उनकी जयंती मनाते हैं, तो यह केवल एक जन्मदिन नहीं, बल्कि प्रेरणा का उत्सव है — एक ऐसा अवसर जब हम अपने भीतर सोए हुए सपनों को जगाने की कोशिश कर सकते हैं।

डॉ. कलाम कहा करते थे — "यदि आप सूर्य की तरह चमकना चाहते हैं, तो पहले सूर्य की तरह जलना सीखिए।" यह एक पंक्ति मात्र नहीं, बल्कि जीवन का गूढ़ सत्य है। वे जानते थे कि सफलता बिना संघर्ष के कभी नहीं मिलती। रामेश्वरम के छोटे से गांव में अख़बार बेचने वाला वह बालक जब भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का शिल्पकार बना, तो उसके पीछे वर्षों की तपस्या, असफलताओं की पीड़ा और आत्मबल की आंच थी।

उनके जीवन से निकलने वाले पाँच ऐसे सूत्र हैं, जो किसी भी व्यक्ति की किस्मत बदल सकते हैं — चाहे वह विद्यार्थी हो, कर्मचारी हो, या जीवन के किसी भी मोड़ पर ठहरा हुआ व्यक्ति।

पहला मंत्र — "सपना वो नहीं होता जो आप सोते वक्त देखते हैं, सपना वो होता है जो आपको सोने न दे।"

यह वाक्य हमें बताता है कि सच्चा सपना वह होता है जो हमारे भीतर बेचैनी पैदा करता है, जो हमें चैन से बैठने नहीं देता। कलाम के लिए सपना केवल कल्पना नहीं था, वह कर्म की ज्वाला थी। जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के लिए भीतर से जाग उठता है, तब उसके लिए नींद भी एक बाधा बन जाती है। ऐसा ही सपना व्यक्ति को महान बनाता है।

दूसरा मंत्र — "अगर सूरज की तरह चमकना है, तो सूरज की तरह जलना होगा।"

जीवन में संघर्षों से भागना आसान है, परंतु उनसे लड़ना ही असली वीरता है। अब्दुल कलाम का जीवन ही इस वाक्य का प्रमाण है। उन्होंने अपने करियर में कई असफलताएँ झेलीं — रॉकेट प्रक्षेपण असफल हुए, परियोजनाएँ अधूरी रहीं, आलोचनाएँ हुईं। पर उन्होंने कभी रुकना नहीं सीखा। उन्होंने कहा था, "असफलता केवल एक सीखने का अवसर है, अंत नहीं।" जो व्यक्ति जलना स्वीकार कर लेता है, वही दूसरों के लिए रोशनी बनता है।

तीसरा मंत्र — "छोटा लक्ष्य बनाना एक अपराध है, हमेशा बड़ा सोचो।"

डॉ. कलाम का विश्वास था कि सीमित सोच व्यक्ति को जंजीरों में बांध देती है। उनका जीवन ही इसका प्रमाण है — उन्होंने भारत को अंतरिक्ष और मिसाइल तकनीक में आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा, जो उस समय असंभव सा लगता था। परंतु वही बड़ा सपना आज 'आत्मनिर्भर भारत' की नींव बना। वे कहा करते थे कि यदि आप सितारों को छूना चाहते हैं, तो पहले आसमान की ओर देखना सीखिए।

चौथा मंत्र — "जिसके पास आत्मविश्वास और मेहनत होती है, वो अपने सपनों को सच कर सकता है।"

कलाम जी के लिए आत्मविश्वास केवल शब्द नहीं था, वह उनकी आत्मा का आधार था। उनका मानना था कि मेहनत वह साधन है जो असंभव को संभव में बदल देता है। वे कहते थे — "यदि आप अपने काम से प्रेम करते हैं, तो असफलता आपको झुका नहीं सकती।" उन्होंने लाखों छात्रों को यह सिखाया कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता, उसका एक ही मार्ग है — निष्ठा और परिश्रम।

पाँचवाँ मंत्र — "मुश्किलें जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन उनसे हार मान लेना जीवन का अंत है।"

यह मंत्र शायद उनके जीवन का सबसे सशक्त संदेश है। उन्होंने अपने प्रारंभिक दिनों में गरीबी, असफलता, और आलोचना सबकुछ देखा, पर कभी हार नहीं मानी। वे कहते थे — "हर कठिनाई अपने भीतर एक अवसर छिपाए होती है।" जब हम संघर्षों से भागने के बजाय उनका सामना करते हैं, तब ही हम अपने भीतर की क्षमता को पहचान पाते हैं।

डॉ. कलाम के ये पाँच सूत्र केवल शब्द नहीं हैं, बल्कि जीवन के पांच दीपक हैं। यदि कोई व्यक्ति इन दीपकों को अपने जीवन में जलाकर रखे, तो अंधकार चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो, वह रास्ता कभी नहीं खोएगा।

अब्दुल कलाम कहा करते थे — "जीवन एक प्रयोगशाला है। हर असफलता एक प्रयोग है, जो सफलता की नई दिशा दिखाती है।"

आज जब हम उनकी स्मृति को नमन करते हैं, तो यह केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि एक वादा होना चाहिए — कि हम अपने भीतर के सपनों को मरने नहीं देंगे, हम जलेंगे, पर रौशनी बनेंगे।

क्योंकि डॉ. कलाम केवल एक व्यक्ति नहीं थे — वे एक विचार थे, और विचार कभी मरते नहीं, वे हर पीढ़ी में नई ऊर्जा बनकर जन्म लेते हैं।

समावेशी राजनीति की प्रतिस्पर्धा, किस करवट बैठेगा 'हाथ'

डॉ. एके वर्मा। बसपा प्रमुख मायावती ने 9 अक्टूबर को कांशीराम के 19वें निर्वाण दिवस पर लखनऊ में महारैली की। उत्तर प्रदेश में 2012 के विधानसभा चुनाव के बाद से बसपा लगातार हाशिए पर पहुंचती गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी को अपना चुनाव क्षेत्र बनाकर 'सबका-साथ, सबका-विकास' मंत्र से दलितों को साथ ले लिया। परिणामस्वरूप प्रदेश की सभी 17 सुरक्षित लोकसभा सीटों पर भाजपा विजयी हुई। इससे भाजपा की दलितों में पैठ गहरी हुई।

सरकार एवं संगठन में दलितों को सम्मानजनक स्थान मिला, लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में सपा-कांग्रेस गठबंधन ने दलितों में भ्रम फैलाया कि मोदी 'चार सौ पार' करके बाबासाहेब आंबेडकर का संविधान बदल देंगे, आरक्षण खत्म कर देंगे, जिससे दलित भाजपा से छिटक कर सपा के साथ हो लिए। ऐसे में मायावती नहीं चाहेंगी कि दलित सपा के साथ जुड़ा रहे। इसीलिए वे दलितों को एकजुट करके बसपा में लौटाना चाहती हैं। क्या ऐसा हो सकेगा? क्या भाजपा और सपा भी दलितों के विकल्प हैं?

सवाल यह भी है कि मायावती के पास दलित लौटें क्यों? 2012 में अखिलेश से हारने के बाद मायावती ने दलितों को मझधार में छोड़ राष्ट्रीय राजनीति को साधने के लिए दिल्ली का रुख कर लिया। 2007 में मायावती सरकार बनने पर दलितों से ज्यादा ब्राह्मणों और मुसलमानों को मंत्रिपरिषद और पार्टी में महत्वपूर्ण पद मिले। दलित ठगे रह गए। 'अपनी सरकार' बनने से दलित अस्मिता तो अक्षुण्ण रही, पर उसकी राजनीतिक आकांक्षाएं पूरी न हो सकीं। दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी ने तिवादी-अस्मितावादी बहिर्वेशी-राजनीति को दरकिनार कर 'सबका-साथ, सबका-विकास' की समावेशी राजनीति शुरू की तो दलितों का बड़ा वर्ग खिसक कर भाजपा की ओर चला गया। मायावती ने 2007 में जिस सोशल इंजीनियरिंग से सत्ता प्राप्त की, उसे वे आगे न ले जा सकीं। उनकी सोशल इंजीनियरिंग दलित-ब्राह्मण गठजोड़ न थी, वरन उन्होंने सभी जातियों में बसपा का जनाधार बढ़ाया था। इतने सफल प्रयोग को मायावती संभाल न सकीं?

कभी-कभी मायावती की राजनीतिक परिपक्वता पर संदेह होता है। उन्होंने सामंतवादी मनोवृत्ति से पार्टी चलाई। 2012 चुनावों के पहले उन्होंने बाबूसिंह कुशवाहा और 2017 चुनावों के पहले स्वामी प्रसाद मौर्य को पार्टी से निकाल दिया। यदि निकालना ही था तो चुनावों में उनका प्रयोग करके निकालना था। 2019 लोकसभा चुनावों में अपने धुर-विरोधी अखिलेश यादव से गठबंधन किया। परिणामस्वरूप विधानसभा चुनाव 2022 में बसपा केवल एक सीट जीत सकी और लोकसभा चुनाव 2024 में उसका खाता नहीं खुला।

मायावती पर आरोप लगे कि भाजपा का परोक्ष समर्थन करने हेतु वे पिछले चुनाव सक्रियता से चुनाव नहीं लड़ीं और अपने उत्तराधिकारी आकाश आनंद को 2024 चुनाव प्रचार के दौरान ही अपदस्थ कर वापस बुला लिया कि वे अभी 'अपरिपक्व' हैं। इससे संदेह हुआ कि आकाश को हटाने के पीछे कहीं वे भाजपा को लाभ तो नहीं पहुंचाना चाहती थीं, क्योंकि आकाश भाजपा के प्रति अति आक्रामक हो रहे थे और दलित अस्मिता की राजनीति कर रहे थे।

मायावती ने 2007 में सोशल इंजीनियरिंग का जो माडल अपनाया, उससे वे 'बहुजन-हिताय, बहुजन-सुखाय' से 'सर्वजन-हिताय, सर्वजन-सुखाय' की समावेशी राजनीति तक पहुंचीं थीं और 'दलित-अस्मिता' की राजनीति पर नहीं लौट सकती थीं। मायावती माडल से भी सशक्त 'सबका-साथ, सबका-विकास' आधारित 'समावेशी माडल' मोदी ने बना लिया था। मायावती को उसकी काट नहीं सूझी। 2024 में राहुल-अखिलेश ने संविधान और आरक्षण पर भ्रम फैलाकर 'पीडीए' (पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक) आधारित आंशिक समावेशी माडल बनाया, जिसका परिणाम उत्तर प्रदेश लोकसभा चुनावों में दिखा।

भावी राजनीति में समावेशी माडलों की स्पर्धा देखने को मिलेगी। कौन पार्टी समाज के कितने घटकों को आकर्षित कर पाती है, यही उसकी चुनावी सफलता-असफलता को तय करेगा। हालांकि मोदी ने इसमें नया आयाम जोड़ दिया है। वे जातीय अस्मिता को वर्ग-अस्मिता तक ले गए हैं। ऐसा नहीं कि भाजपा टिकट वितरण या पद आवंटन में जातियों की अनदेखी करेगी, लेकिन उसने सभी जातियों-धर्मों को वर्गों में समेट दिया है जैसे-महिला, युवा, किसान, मजदूर, लाभार्थी और गरीब आदि। फलस्वरूप, भाजपा ने हिंदुत्व और सनातन की छतरी के नीचे सभी धर्मों और जातियों को स्थान दिया है। यह पार्टी के दूरगामी सोच और भावी रणनीति को रेखांकित करता है, जो उसके बढ़ते जनाधार का कारण है।

मायावती की सक्रियता-निष्क्रियता, दोनों ही भाजपा के पक्ष में जाती है। उनकी निष्क्रियता से आरोप लगते कि वे भाजपा को परोक्ष समर्थन दे रही हैं, लेकिन उनकी सक्रियता भी भाजपा के लिए लाभकारी होगी। त्रिकोणीय संघर्ष में बसपा ने 2007 में 30 प्रतिशत पर और सपा ने 2012 में 29 प्रतिशत पर सरकारें बनाईं। लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा ने प्रदेश में खराब प्रदर्शन किया, फिर भी उसका जनाधार 41.67 प्रतिशत बना रहा। ऐसे में यदि मायावती डटकर चुनाव लड़ीं, तो वे चुनाव जीते या नहीं, लेकिन उन जाटव-दलितों को अपनी ओर खींच सकती हैं, जो सपा की ओर चले गए थे।

वैसे मायावती के अधिकतर समर्थक जाटव रहे हैं, जबकि वाल्मीकि, पासी, धोबी, कोरी, डोम जैसी गैर-जाटव जातियां प्रायः भाजपा समर्थक रही हैं। फिर 2007 में मायावती को ब्राह्मणों का साथ मिला, जो अब संभव नहीं। जिस प्रकार मोदी-योगी सरकार में दलितों को अनेक लाभ मिले, बाबा साहेब का सम्मान हुआ और उनको राजनीति की मुख्यधारा में लाया गया, उतना उन्हें मायावती की सरकार में भी नसीब नहीं था। अतः दलितों के पास कोई कारण नहीं कि वे मायावती की ओर लौटें। देखना रुचिकर होगा कि क्या मायावती नई पारी दलित-अस्मिता पर शुरू करती हैं या सोशल-इंजीनियरिंग से परिपूर्ण एक नए समावेशी-राजनीतिक-माडल का उद्घोष करती हैं।

अभियान

दीपावली की रात तुलसी पूजन से जागृत होती है लक्ष्मी कृपा और विष्णु आशीर्वाद की अनंत धारा

दीपों का पर्व दीपावली केवल बाहरी जगमगाहट नहीं है, यह मनुष्य के भीतर के अंधकार पर भी विजय का प्रतीक है। जब भगवान श्रीराम चौदह वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे, तब नगरवासियों ने उनके स्वागत में घी के दीपों से पूरी अयोध्या को आलोकित किया था। उस रात के बाद से हर वर्ष यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि सत्य, धर्म और प्रकाश की जीत सदैव होती है। लेकिन इस दिव्य रात्रि में एक और रहस्य छिपा है, जिसे बहुत कम लोग जानते हैं — यह वह क्षण है जब ब्रह्मांड की ऊर्जा सबसे अधिक सजीव होती है, जब लक्ष्मी और विष्णु दोनों के आशीर्वाद का संगम संभव होता है।

कहते हैं कि कार्तिक मास की अमावस्या की रात स्वयं माता लक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं। वे उन घरों में प्रवेश करती हैं जो स्वच्छ, प्रकाशमान और श्रद्धा से भरे हों। इस वर्ष दीपावली सोमवार, 20 अक्टूबर को है — और यह सोमवार अत्यंत शुभ माना जा रहा है क्योंकि यह दिन चंद्रदेव का है, जो स्वयं शांति और सौंदर्य के अधिपति हैं। इस दिन यदि भक्त सुबह से ही शुभ कर्मों का आरंभ करे, तो उसका प्रभाव पूरे वर्ष स्थिर रहता है।

भोर होते ही जब पूर्व दिशा में हल्की सुनहरी आभा फैलने लगे, तब सबसे पहले स्नान कर अपने घर के आंगन में तुलसी माता के पास जाएं। तुलसी केवल एक पौधा नहीं, स्वयं श्री हरि की प्रिय पत्नी तुलसी देवी का रूप मानी जाती हैं। पौराणिक कथा कहती है कि एक बार भगवान विष्णु ने तुलसी से कहा था — "जो भी तेरा पूजन करेगा, वह मेरा पूजन करेगा।" इसलिए दीपावली की सुबह तुलसी पूजन का विशेष महत्व है। तुलसी को शुद्ध जल से स्नान कराएं, उसके पास पीतल या मिट्टी का दीपक रखें और उसमें घी का दीप जलाएं। इस समय यदि आप तुलसी चालीसा का पाठ करें और "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का जप करें, तो माना जाता है कि घर के सभी ग्रहदोष शांत हो जाते हैं।

दिन भर घर में प्रसन्नता और स्वच्छता बनी रहनी चाहिए। घर का प्रत्येक कोना सुगंधित दीपों से प्रकाशित करें। संध्या होते ही जब सूर्य पश्चिम में ढलने लगे, तब दीपदान का शुभ समय आरंभ होता है। कहते हैं कि इस समय पृथ्वी और आकाश के बीच की ऊर्जा रेखा सबसे अधिक सक्रिय होती है, और इस समय जलाया गया दीप केवल मिट्टी का नहीं होता, वह आत्मा का प्रतीक बन जाता है। जो व्यक्ति इस समय प्रेम, श्रद्धा और आभार के साथ दीप जलाता है, उसके जीवन के अंधकार स्वयं मिट जाते हैं।

रात्रि में जब पूर्ण अंधकार छा जाए, तब लक्ष्मी-गणेश पूजन का मुहूर्त आता है। भगवान गणेश को पहले पूजें, क्योंकि वे विघ्नों का नाश करने वाले हैं। फिर मां लक्ष्मी का आह्वान करें। उन्हें कमल पुष्प अर्पित करें, लाल आसन पर बिठाएं और चंदन, कुमकुम, धूप-दीप से आराधना करें। इस समय लक्ष्मी मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः" का 108 बार जप अत्यंत फलदायी होता है। पूजा के अंत में भगवान विष्णु का ध्यान कर तुलसी के पास एक दीप अवश्य जलाएं।

पुराणों में कहा गया है कि दीपावली की इस रात जब तुलसी के समीप दीप प्रज्वलित होता है, तब वह प्रकाश सीधे वैकुंठ तक पहुंचता है। वहां भगवान विष्णु उस दीप की ज्योति से प्रसन्न होकर अपने भक्त के जीवन में स्थायी सुख, शांति और समृद्धि का वरदान देते हैं। लक्ष्मी और विष्णु की यह संयुक्त उपासना इस रात को पूर्ण बनाती है — जैसे चंद्र और चांदनी एक साथ चमकते हैं, वैसे ही लक्ष्मी और हरि का आशीर्वाद भक्त के जीवन को आलोकित कर देता है।

दीपावली का यह पर्व हमें याद दिलाता है कि समृद्धि केवल धन में नहीं, बल्कि संतोष में है; और प्रकाश केवल दीप में नहीं, बल्कि हमारे भीतर भी जलता है। जो व्यक्ति इस रात श्रद्धा, आभार और प्रेम से अपने भीतर की ज्योति प्रज्वलित करता है, उसके जीवन में कोई अंधकार टिक नहीं पाता। जब तुलसी के समीप जलता दीप धीरे-धीरे हवा में थरथराता है, तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे स्वयं मां लक्ष्मी उस प्रकाश में मुस्कुरा रही हों और श्रीहरि विष्णु अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रहे हों — यही दीपावली का सच्चा अर्थ है, यही उसका अनंत संदेश है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

प्राचीन भारतियों ने संस्कृति और विज्ञान का प्रचार किया, आक्रमण नहीं किया: मोहन भागवत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार को अपने वक्तव्य में कहा कि प्राचीन भारत के लोग दुनिया भर में अपनी संस्कृति, विज्ञान और ज्ञान का प्रचार प्रसार करने गए, लेकिन उन्होंने किसी पर आक्रमण नहीं किया और न ही किसी धर्मांतरण में संलग्न हुए। यह विचार उन्होंने 'आर्य युग विषय कोश' की शुरुआत के अवसर पर व्यक्त किए।

भागवत ने कहा कि भारत पर अनेक आक्रमणकारी आए जिन्होंने देश की संपत्ति लूटी, लोगों को गुलाम बनाया और सांस्कृतिक विरासत को नुकसान पहुँचाया। उन्होंने यह भी कहा कि अंतिम आक्रमणकारियों ने भारतीयों के मस्तिष्क और सोच को भी लूटा, जिससे हमारी बौद्धिक और सांस्कृतिक शक्ति पर चोट पड़ी। इसके बावजूद, हमारे पूर्वजों ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में, मेक्सिको से साइबेरिया तक, अपनी संस्कृति और विज्ञान का प्रचार किया। उन्होंने लोगों को शिक्षा, विज्ञान, कला और आध्यात्मिक ज्ञान सिखाया, लेकिन कभी भी किसी पर जबरन नियंत्रण या धर्मांतरण का प्रयास नहीं किया।

भागवत ने जोर देकर कहा कि भारतीय संस्कृति हमेशा सद्भाव, एकता और ज्ञान के संदेश पर आधारित रही है। उन्होंने कहा कि भारतीयों की आध्यात्मिक शक्ति आज भी फल-फूल रही है और हम आर्यवर्त के वंशजों के रूप में विज्ञान, अस्त्र-शस्त्र, सामर्थ्य, आस्था और ज्ञान से संपन्न हैं। उन्होंने कहा कि हमें अपनी प्राचीन ताकत और क्षमताओं को पहचानना होगा और उन्हें आधुनिक युग के विकास और नवाचार में सही दिशा में प्रयोग करना होगा।

भागवत ने यह भी बताया कि प्राचीन भारतीयों का दृष्टिकोण हमेशा सहयोग और ज्ञान पर आधारित रहा, न कि विजय और अधीनता पर। यही दृष्टिकोण भारतीय सभ्यता को विश्व स्तर पर अमिट स्थान दिलाने में सक्षम रहा है और आज भी यह संदेश दुनिया भर में प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी सभ्यता और विज्ञान के गौरव को समझकर समाज और राष्ट्र के विकास के लिए इसे उपयोग में लाना चाहिए।

इस अवसर पर आरएसएस के वरिष्ठ पदाधिकारी और विद्वान उपस्थित थे, जिन्होंने भागवत के विचारों का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक भारत को अपनी प्राचीन संस्कृति और विज्ञान से प्रेरणा लेकर शिक्षा, तकनीक और सामाजिक विकास के क्षेत्रों में अग्रणी बनना चाहिए। कार्यक्रम ने भारतीय सभ्यता की गौरवमयी छवि, उसकी विश्वस्तरीय उपलब्धियों और सांस्कृतिक विरासत को पुनः उजागर किया। भागवत के अनुसार, यदि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियां प्राचीन भारतीय ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति के महत्व को समझें और उसे अपने जीवन और समाज के विकास में लागू करें, तो भारत विश्व में ज्ञान और सभ्यता के क्षेत्र में फिर से अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकता है। उनका मानना है कि यह केवल गौरव का विषय नहीं है, बल्कि आधुनिक समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए भी आवश्यक है।

बंगाल में काली पूजा से पहले मौसम अलर्ट, सात जिलों में भारी बारिश का खतरा

(जीएनएस)। कोलकाता। बंगाल में काली पूजा से ठीक पहले मौसम विभाग ने सात जिलों के लिए भारी बारिश और गरज-चमक के साथ तूफानी मौसम की चेतावनी जारी की है। रविवार सुबह से ही राज्य के कई हिस्सों में बादल छाए हुए हैं और तापमान सामान्य से ऊपर दर्ज किया गया है। मौसम विभाग ने आने वाले 48 घंटों में कई जिलों में अत्यधिक बारिश होने की संभावना जताई है।

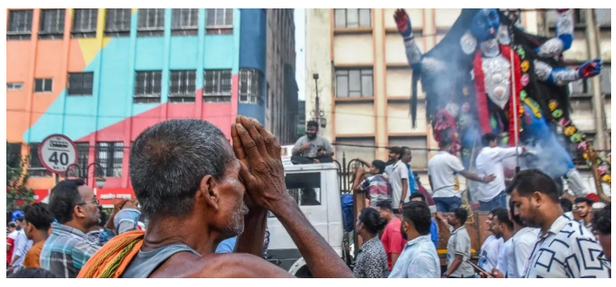

विशेष रूप से दक्षिण बंगाल के तटवर्ती जिले उत्तर 24 परगना और दक्षिण 24 परगना में हल्की से मध्यम बारिश होने का अनुमान है। कोलकाता समेत आसपास के जिलों में भी आसमान बादलों से घिरा हुआ है और स्थानीय लोगों ने काली पूजा की तैयारियों के बीच मौसम की अनिश्चितता के कारण सतर्क रहने की सलाह दी है। पश्चिम बंगाल के अन्य जिलों में भी मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है। 24 परगना और दोनों मिदनापुर जिलों में गरज और बिजली के साथ बारिश का अलर्ट है, जबकि उत्तर बंगाल के दार्जिलिंग, कलिम्पोंग और जलपाईगुड़ी जिलों में भी आंशिक रूप से बारिश होने की संभावना जताई गई है।

जलपाईगुड़ी के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश हो सकती है, जबकि अन्य हिस्सों में मौसम अपेक्षाकृत शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विभाग ने यह भी बताया कि मंगलवार को बंगाल की खाड़ी में एक नया निम्न दबाव क्षेत्र बनने की संभावना है, जो गुरुवार तक गहरे अवसाद में परिवर्तित हो सकता है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि यह दबाव बंगाल को प्रभावित करेगा या नहीं। बीते वर्षों में काली पूजा के दौरान और उसके पहले राज्य में अक्सर भारी बारिश होती रही है, खासकर बंगाल की खाड़ी में लगातार बनने वाले चक्रवात और निम्न दबाव के क्षेत्रों के कारण। इस बार भी लोगों ने मौसम विभाग की चेतावनी के बावजूद पूजा की तैयारियों को तेज कर दिया है। श्रद्धालु पहले ही ठाकुर के दर्शन के लिए पंडालों की ओर निकल चुके हैं। कोलकाता से लेकर बारासात और नैहाटी तक पंडालों में लोगों का तांता लगा हुआ है।

रविवार सुबह से कई इलाकों में आंशिक रूप से बादल छाए रहे और सामान्य से अधिक तापमान के कारण गर्मी बनी रही। मौसम विभाग के अनुसार दक्षिण बंगाल के तटीय क्षेत्रों—उत्तर 24 परगना और दक्षिण 24 परगना—में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है, जबकि पूर्व मेदिनीपुर और पश्चिम मेदिनीपुर में गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश का अनुमान है। अन्य जिलों में भारी बारिश नहीं होने की संभावना है, लेकिन आसमान में बादल छाए रहेंगे।

मौसम विभाग ने बताया कि काली पूजा और भाई फोंटा के दौरान, सोमवार से बुधवार तक दक्षिण बंगाल में सामान्यतः बारिश की संभावना नहीं है। उत्तर बंगाल में भी इस दौरान मौसम अपेक्षाकृत शुष्क रहने की उम्मीद है। राज्य प्रशासन ने भी पूजा आयोजनों के दौरान बारिश और तूफानी मौसम की स्थिति के लिए सतर्कता बरतने का आदेश दिया है। इस बार काली पूजा की तैयारियों और मौसम की अनिश्चितता के बीच लोगों ने उत्सव में भाग लेने की पूरी तैयारी कर ली है, लेकिन प्रशासन और लोगों को मौसम की चेतावनी को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा उपायों का पालन करना आवश्यक बताया गया है।

पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे हाथियों की सुरक्षा के लिए लागू करेगा आईडीएस, ट्रेन दुर्घटनाओं में कमी की उम्मीद

(जीएनएस)। गुवाहाटी। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) ने हाथियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और तेज रफ्तार ट्रेनों से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए अपने नेटवर्क में 'इंटूजन डिटेक्शन सिस्टम' (आईडीएस) लागू करने का ऐतिहासिक फैसला किया है। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, इस उन्नत तकनीक का पूरा नेटवर्क अप्रैल 2026 तक चालू हो जाएगा, जिससे हाथियों की आवाजाही पर नजर रखने और संभावित खतरे से पहले ही चेतावनी जारी करने में मदद मिलेगी। एनएफआर के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कपिंजल किशोर शर्मा ने बताया कि आईडीएस को पहले चार प्रमुख खंडों में सफलतापूर्वक परीक्षण के लिए लागू किया गया है। आईडीएस तकनीक रेलवे पटरियों के पास हाथियों की आवाजाही का पता लगाने के लिए उन्नत ऑप्टिकल फाइबर सेंसिंग तकनीक का उपयोग करती है। जब हाथी किसी रेलवे लाइन के पास आते हैं, तो यह सिस्टम तुरंत ट्रेन चालकों और कंट्रोल रूम को 'रीयल-टाइम अलर्ट' भेजता है, जिससे दुर्घटना की संभावना कम हो जाती है। शर्मा ने कहा, ''हमने एनएफआर नेटवर्क में आईडीएस को लागू करके न केवल हाथियों की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि ट्रेन संचालन में देरी और दुर्घटनाओं को भी कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।'' उन्होंने बताया कि आईडीएस प्रणाली को सबसे पहले 2022 में लुमडिंग और अलीपुरद्वार डिवीजनों के दो स्थानों पर स्थापित किया गया था और इसके सफल संचालन के बाद इसे अन्य महत्वपूर्ण खंडों में विस्तारित किया जा रहा है।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि इस परियोजना के पूरे नेटवर्क में विस्तारित होने से हाथियों की आवाजाही वाले सभी चयनित स्थानों पर समय रहते चेतावनी मिलने लगेगी और इससे न केवल वन्यजीवों की सुरक्षा बढ़ेगी, बल्कि ट्रेन संचालन भी सुरक्षित और सुचारू रहेगा। अधिकारियों ने आशा जताई कि अप्रैल 2026 तक यह परियोजना पूरी तरह कार्यात्मक हो जाएगी और पूर्वोत्तर में ट्रेन और हाथियों की टकराव की घटनाओं में काफी कमी आएगी। पूर्वोत्तर भारत में हाथियों की संख्या और उनके आवास का विस्तार ध्यान में रखते हुए यह तकनीक बेहद महत्वपूर्ण साबित होगी। वन्यजीव विशेषज्ञों का कहना है कि आईडीएस जैसी उन्नत तकनीक वन्यजीवों के संरक्षण और रेलवे संचालन में संतुलन स्थापित करने के लिए क्रांतिकारी कदम है। इस पहल से न केवल हाथियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि यह क्षेत्रीय पारिस्थितिकी और मानव-वन्यजीव सह-अस्तित्व के लिए भी सकारात्मक संदेश देगा। एनएफआर अधिकारियों ने यह भी बताया कि भविष्य में अन्य खंडों और संवेदनशील क्षेत्रों में भी आईडीएस तकनीक को विस्तारित करने पर विचार किया जाएगा, ताकि पूरे नेटवर्क में हाथियों की सुरक्षा के लिए उच्च स्तरीय निगरानी सुनिश्चित की जा सके। इस पहल के जरिए रेलवे और वन्यजीव संरक्षण के बीच एक नई साझेदारी स्थापित होने की उम्मीद है।

दिल्ली में दीपोत्सव पर 1.51 लाख दीयों से जगमगा उठा कर्त्तव्य पथ, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने जताई 'राम राज्य' की कामना

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिल्ली में शनिवार को दीपोत्सव का भव्य आयोजन कर्त्तव्य पथ पर किया गया, जिसे 1.51 लाख दीयों से सजाया गया और ड्रोन की मदद से रामायण-थीम पर आधारित लेजर शो द्वारा आसमान जगमगा उठा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि दिल्ली में ''राम राज्य'' स्थापित होना चाहिए, जहां हर नागरिक को सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवसाय के क्षेत्र में समान अवसर मिलें।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने पिछले सात महीनों में अपनी सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि दिल्ली में शांति, सुव्यवस्था और प्रगति को सुनिश्चित करना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा, ''हम दिल्ली के लोगों की सेवा कर रहे हैं और हमारा लक्ष्य है कि दिल्ली में ऐसा राम राज्य हो, जहां व्यापारियों को अपना व्यवसाय करने में कोई बाधा न हो, छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो और स्वास्थ्य सेवाएं हर नागरिक तक सहज रूप से पहुंचे।''

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कैबिनेट मंत्री कपिल मिश्रा, मनजिंदर सिंह सिरसा और रवींद्र इंद्राज के साथ मिलकर कर्त्तव्य पथ पर दीप जलाए। इसके अलावा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय कलाकारों ने रामायण और दिवाली से जुड़े नाट्य व संगीत प्रस्तुत किए। ड्रोन लेजर शो के माध्यम से भगवान राम, अयोध्या का भव्य राम मंदिर, रामायण की कथाएं और दीपावली की झलकियां कर्त्तव्य पथ के ऊपर आकाश में दिखाईं गईं, जिससे हर उपस्थित व्यक्ति मंत्रमुग्ध हो गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली आने वाले वर्षों में और अधिक स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनायी जाएगी। उन्होंने जनता से अपील की कि वे इस प्रयास में सहयोग करें और अपनी भागीदारी से दिल्ली को आदर्श शहर बनाने में मदद करें।

इस आयोजन में हजारों लोग शामिल हुए और उन्होंने दीयों की रोशनी और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आनंद लिया। दीपोत्सव कार्यक्रम ने न केवल शहर को रोशन किया बल्कि लोगों के मन में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्साह भी भर दिया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के 'राम राज्य' के संदेश ने उपस्थित नागरिकों में आशा और सकारात्मकता की भावना जगाई, जिससे यह उत्सव दिल्लीवासियों के लिए अविस्मरणीय बन गया।

छत्तीसगढ़ के माओवादी प्रभावित क्षेत्रों में विकास और शिक्षा की नई क्रांति, युवाओं ने जीते सफलता के झंडे

(जीएनएस)। नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ का मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिला, जो वर्षों तक माओवादी हिंसा की चपेट में रहा, अब शिक्षा, विकास और सामाजिक प्रगति की नई कहानी लिख रहा है। इस क्षेत्र में हाल ही में हुई सफलता ने यह साबित कर दिया कि जब सही मार्गदर्शन, सुरक्षा और अवसर मिलते हैं, तो कठिन परिस्थितियों में भी युवाओं की प्रतिभा उजागर हो सकती है।

हाल ही में यहां के 10 आदिवासी युवाओं ने स्टाफ सेलेक्शन कमीशन (एसएससी) और छत्तीसगढ़ पुलिस कांस्टेबल जैसी कठिन परीक्षाओं में सफलता हासिल की। इनमें दो युवतियां भी शामिल हैं, जो इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण का प्रतीक बन गई हैं। पांच युवाओं का चयन पैरा मिलिट्री फोर्स के लिए एसएससी के माध्यम से हुआ, जबकि बाकी पांच ने छत्तीसगढ़ पुलिस में सिपाही के रूप में काम करने का गौरव हासिल किया।

इस सफलता के पीछे आइटीबीपी की 27वीं बटालियन के जवानों का विशेष योगदान रहा। जवानों ने इन युवाओं को अपने कैंप में दो वर्षों तक करियर काउंसलिंग, शारीरिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्रदान किया। आइटीबीपी के छत्तीसगढ़ में कमांडिंग आफिसर विवेक कुमार पांडेय ने कहा कि जब विश्वास, विकास और सुरक्षा एक साथ आगे बढ़ते हैं, तो बंदूक की जगह कलम और भय की जगह उम्मीद का जन्म होता है।

मोहला-मानपुर के रहने वाले सुनील कुमार, नयन कुमार बंसोड़, आयुष, सुशांत और धर्मरत्न ने एसएससी के माध्यम से पैरा मिलिट्री फोर्स में चयन प्राप्त किया, जबकि सुनील कुमार, विवेक, प्रशांत, गजेश्वरी रावटे और इंजला एक्का ने छत्तीसगढ़ पुलिस में सिपाही की नौकरी पाई। सपी यशपाल सिंह ने बताया कि माओवादी हिंसा के कारण औंधी गांव में आइटीबीपी का कैंप खोला गया था, जिससे युवाओं को सकारात्मक दिशा और मार्गदर्शन मिला।

राज्य में माओवादी हिंसा अब केवल दक्षिण बस्तर के बीजापुर और सुकमा जिलों तक सीमित रह गई है। हाल ही में छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में 271 माओवादियों के सामूहिक आत्मसमर्पण ने संगठन की कमर तोड़ दी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि माओवादी हिंसा के खिलाफ लड़ाई निर्णायक चरण में है, और प्रभावित जिलों की संख्या 2014 में 182 से घटकर अक्टूबर 2025 में केवल 11 रह जाएगी।

इस प्रकार, पिछले पांच दशकों से हिंसा और असुरक्षा का सामना कर रहे गांव अब केंद्र सरकार की निगरानी में विकास, शिक्षा और सामाजिक प्रगति का अनुभव कर रहे हैं। मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जैसे क्षेत्रों में युवाओं की उपलब्धि यह संदेश देती है कि सही अवसर और मार्गदर्शन मिलने पर किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। यह सफलता न केवल आदिवासी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है, बल्कि पूरे माओवादी प्रभावित क्षेत्र में शिक्षा और विकास की क्रांति की उम्मीद को भी मजबूत करती है।

इस नए दौर में माओवादियों की हिंसा घटने के साथ ही सरकार और सुरक्षा बल युवाओं के सशक्तिकरण, रोजगार और शिक्षा के माध्यम से क्षेत्र में स्थायी शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहे हैं। इस पहल से यह स्पष्ट हो गया है कि विकास और सुरक्षा का समन्वय किसी भी चुनौतीपूर्ण इलाके को नई पहचान दे सकता है।

रतलाम में अल्प्राजोलम निर्माण की अवैध लैब का भंडाफोड़, दो गिरफ्तार, बड़े स्तर पर नशे की साजिश का पर्दाफाश

(जीएनएस)। नई दिल्ली। मध्य प्रदेश के रतलाम जिले के सेजावता गांव में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने एक अवैध लैब का भंडाफोड़ किया है, जहां अल्प्राजोलम नामक नशीली दवा का निर्माण किया जा रहा था। इस कार्रवाई में एनसीबी ने लैब से 13.762 किलोग्राम अल्प्राजोलम पाउडर जब्त किया और दो आरोपित रूप सिंह चौहान तथा अभिजीत सिंह चौहान को गिरफ्तार किया।

अल्प्राजोलम आमतौर पर डिप्रेशन या मानसिक रोगों के इलाज में डॉक्टर के पर्चे पर दिया जाता है। हालांकि, इसका अवैध उपयोग स्मैक जैसी नशीली दवाओं में मिलावट करने के लिए भी किया जाता है। एनसीबी की टीम ने लैब को तुरंत सील कर दिया और आरोपितों को न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें रिमांड पर इंदौर ले जाया गया।

एनसीबी के जोनल निदेशक रीतेश रंजन ने बताया कि आरोपितों ने सैनेटाइजर बनाने वाली कंपनी का हवाला देते हुए गोदाम का किराया लिया था। उनके पास 2023 में समाप्त हो चुका एक रासायनिक लाइसेंस भी था। लैब गोदाम के पीछे एक सीमेंट ब्लॉक बनाने के कारखाने से सटी हुई थी, जिससे रात के समय उनके गतिविधियों की आवाजाही आसानी से छिप जाती थी। गोदाम की छत के ऊपरी हिस्से में ही अल्प्राजोलम का निर्माण होता था और पास में एक वैध दवा कंपनी होने के कारण किसी को संदिग्ध गतिविधियों की भनक नहीं लगती थी।

शनिवार को की गई छापेमारी में अल्प्राजोलम के अलावा बड़ी मात्रा में रासायनिक पदार्थ, उपकरण और साल्वेंट्स भी जब्त किए गए। इसमें राउंड बाटम फ्लास्क, आयल बाथ, कंडेंसर, स्टिरर, थर्मामीटर जैसे उपकरण शामिल हैं। बरामद रसायन में एथाइल एसीटेट, आइसोप्रोपाइल अल्कोहल, टोल्यून, मेथेनाल, क्लोरोफार्म, ग्लेशियल एसिटिक एसिड, हाइड्रोक्लोरिक एसिड, मैग्नीशियम सल्फेट, सोडियम बाइकार्बोनेट और सोडियम क्लोराइड जैसे खतरनाक पदार्थ शामिल थे।

जानकारी के अनुसार, आरोपित रूप सिंह चौहान ने इंदौर के निजी कॉलेज से बीटेक किया है और पहले भी कई फार्मास्यूटिकल यूनिट्स चला चुके हैं। वहीं, अभिजीत सिंह चौहान ने बीफार्मा की डिग्री हासिल की है। दोनों की गतिविधियों का व्यापक नेटवर्क होने का संदेह है, जिसमें अंतरराज्यीय सप्लाई, वित्तीय लेन-देन और नशे की गिरोह से संबंध शामिल हो सकते हैं।

एनसीबी अब आरोपितों के आपसी संबंधों, सप्लाई चैन और नशीली दवाओं के अवैध कारोबार की जांच कर रही है। अधिकारियों का कहना है कि इस लैब का भंडाफोड़ केवल रतलाम जिले तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति के खिलाफ एक बड़ी सफलता है। इस कार्रवाई से स्पष्ट हुआ कि उच्च तकनीकी और शिक्षित अपराधी भी नशीली दवाओं के अवैध कारोबार में शामिल हो रहे हैं और इसके खिलाफ सतत निगरानी और कड़ी कार्रवाई की आवश्यकता है।

इस प्रकार, रतलाम में हुई यह कार्रवाई न केवल अल्प्राजोलम की अवैध निर्माण गतिविधियों को रोकने में महत्वपूर्ण है, बल्कि देश में नशीली दवाओं की तस्करी और अवैध उत्पादन के खिलाफ संदेश भी देती है कि कानून व्यवस्था सतर्क है और अपराधियों को अंजाम भुगतने से कोई नहीं रोक सकता।

श्री अश्विनी वैष्णव ने आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर भीड़ प्रबंधन का जायजा लिया, यात्रियों से सीधे बातचीत की

(जीएनएस)। नई दिल्ली, केंद्रीय रेल, सूचना प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने त्योहारों के मौसम में यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए आज आनंद विहार रेलवे स्टेशन का औचक निरीक्षण किया।

मंत्री अश्विनी वैष्णव ने स्टेशन पर होल्डिंग एरिया का निरीक्षण किया। उन्होंने यात्रियों से सीधे बातचीत की। इस दौरान उन्होंने यात्रियों से रेलवे परिसर की स्वच्छता और प्रदान की जा रही सुविधाओं के बारे में प्रतिक्रिया (फीडबैक) ली।

मीडिया से बातचीत करते हुए श्री वैष्णव ने कहा कि यात्रियों की भारी भीड़ के बावजूद उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए रेलवे ने व्यापक इंतजाम किए हैं। यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया पर रेलवे को लेकर भ्रामक वीडियो फैलाने वालों पर कार्यवाही की जा रही हैं । साथ ही अपील की कि रेलवे को लेकर भ्रामक वीडियो न फैलाएं।

इस निरीक्षण के दौरान, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार और उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार वर्मा सहित रेलवे के कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

निरीक्षण के बाद अश्विनी वैष्णव ने विश्वास व्यक्त किया है कि भीड़ प्रबंधन और यात्री सुविधाओं के लिए किए गए ये व्यापक इंतजाम आगामी दीवाली और छठ जैसे प्रमुख त्योहारों के दौरान लाखों यात्रियों के लिए सुगम और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करेंगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल विक्रम संवत 2082, नूतन वर्ष के पहले दिन गांधीनगर-अहमदाबाद में नागरिकों के साथ शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करेंगे

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के दीपावली-नूतन वर्ष के अवसर पर शुभकामना-स्नेह मिलन कार्यक्रम

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल विक्रम संवत 2082 के पहले दिन बुधवार, 22 अक्टूबर को नागरिकों के साथ नूतन वर्ष की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करेंगे।

मुख्यमंत्री बुधवार सुबह 7.00 बजे गांधीनगर स्थित पंचदेव मंदिर में दर्शन कर नूतन वर्ष की शुरुआत करेंगे। वे 7.30 बजे अडालज स्थित त्रिमंदिर में दर्शन-पूजन के लिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री इसके बाद सुबह 8.00 बजे मंत्रिमंडल निवास संकुल स्थित कम्युनिटी सेंटर में नूतन वर्ष के अवसर पर नागरिकों के साथ शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करेंगे।

इसके बाद मुख्यमंत्री सुबह 8.50 बजे राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत को नूतन वर्ष की शुभकामनाएं देने के लिए राजभवन जाएंगे।

श्री भूपेंद्र पटेल सुबह 10.30 बजे अहमदाबाद के शाहीबाग स्थित एनेक्सी गेस्ट हाउस में नागरिकों से नववर्ष की शुभकामनाओं के आदान-प्रदान के लिए मुलाकात करेंगे।

इससे पूर्व, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सुबह 10.00 बजे अहमदाबाद स्थित भद्रकाली मंदिर जाएंगे, जहां वे भद्रकाली माता के दर्शन करेंगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल नूतन वर्ष के दिन पूर्वाह्न 11.45 बजे शाहीबाग डफनाला स्थित पुलिस ऑफिसर्स मेस में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और उनके परिवारजनों को नूतन वर्ष की शुभकामनाएं देने के लिए आयोजित समारोह में भी उपस्थित रहेंगे।

वड़ोदरा मंडल द्वारा टिकट जांच में कीर्तिमान

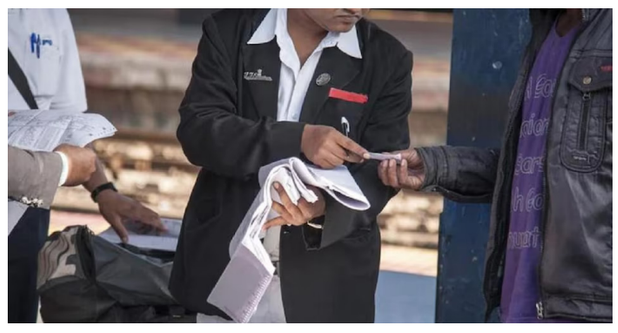

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल मार्गदर्शन में एवं वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के नेतृत्व में वाणिज्य विभाग की टिकट जांच टीम द्वारा 18 अक्टूबर ,2025 को सघन टिकट जांच आयोजित की गई, जिसमें दिवाली/छठ स्पेशल आदि यात्री गाड़ियों में सघन जांच कर मंडल द्वारा किसी एक दिवस पर सर्वाधिक टिकट जांच आय रु16 लाख 27 हजार अर्जित की गई। यह वडोदरा मंडल द्वारा टिकट जांच इतिहास में एक नया कीर्तिमान है।

इस दौरान कुल 2223 अनियमित यात्रा के केस दर्ज किये गए। उक्त सघन जांच आने वाले दिवसों में भी जारी रहेगी ।

अयोध्या ने दीपोत्सव 2025 में स्थापित किया नया विश्व रिकॉर्ड, लाखों दीयों से जगमगा उठा शहर

(जीएनएस)। अयोध्या। अयोध्या ने इस दीपोत्सव 2025 में दुनिया को एक भव्य और ऐतिहासिक दृश्य प्रस्तुत किया, जब लाखों दीयों को प्रज्वलित करके एक नया विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया गया। आधुनिक तकनीक की मदद से इस विशाल आयोजन में प्रत्येक दीये की गिनती ड्रोन कैमरों से की गई, जिससे विश्वस्तरीय सटीकता सुनिश्चित की जा सकी। राम की पैड़ी पर आयोजित भव्य लेजर लाइट शो ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और रामलला के दरबार की शोभा को कई गुना बढ़ा दिया।

इस महापर्व के अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खुद रामलला के दरबार में दीप प्रज्वलित किए और सरयू नदी की महाआरती में हिस्सा लिया। सीएम योगी ने अपने संबोधन में कहा कि यह दिन 500 साल के संघर्ष के बाद भगवान राम के मंदिर में स्थायी रूप से विराजमान होने का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि दीपोत्सव केवल प्रकाश का उत्सव नहीं है, बल्कि यह धर्म, संस्कृति और सद्भाव का संदेश भी फैलाता है।

दीपोत्सव के आयोजन में पूरे शहर को रंग-बिरंगे लाइट्स और सजावट से सजाया गया। रामलीला ग्राउंड और आसपास के मार्गों पर भी विशेष रोशनी का इंतजाम किया गया, जिससे श्रद्धालुओं और पर्यटकों को एक अद्भुत अनुभव प्राप्त हुआ। आयोजन में देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु शामिल हुए और उन्होंने ऐतिहासिक राम मंदिर के दर्शन किए।

लेजर लाइट शो, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और आस्था के मेल ने दीपोत्सव को यादगार बनाया। आयोजकों ने बताया कि शहर के प्रत्येक कोने में छोटे-छोटे दीयों से सजावट की गई थी, जबकि प्रमुख स्थानों पर हजारों दीयों की कतारें बनाकर अद्भुत दृश्य प्रस्तुत किया गया। इस आयोजन ने अयोध्या को एक बार फिर विश्व मानचित्र पर धर्म और संस्कृति के केंद्र के रूप में स्थापित किया।

अयोध्या के इस दीपोत्सव ने यह संदेश भी दिया कि त्योहारों का वास्तविक महत्व केवल सजावट और उत्सव नहीं, बल्कि आस्था, समरसता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में है। नागरिकों ने इस अवसर पर अपने परिवार और मित्रों के साथ दीप जलाकर खुशियों और सद्भाव का उत्सव मनाया।

भारत में ईरानी राजदूत इराज इलाही का कार्यकाल समाप्त, चाबहार सहयोग और मित्रता पर जोर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत में ईरान के पूर्व राजदूत इराज इलाही ने अपने राजनयिक कार्यकाल का समापन करते हुए भावनात्मक विदाई संदेश जारी किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भारत और ईरान स्वाभाविक साझेदार हैं और दोनों देशों के बीच पारंपरिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंध समय के साथ और मजबूत हुए हैं।

इलाही ने अपने संदेश में विशेष रूप से चाबहार पोर्ट के संचालन को अपने कार्यकाल की बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि चाबहार पोर्ट का संचालन भारत और ईरान के लिए क्षेत्रीय विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान का महत्वपूर्ण अवसर है। पोर्ट जल्द ही ईरान के रेलवे नेटवर्क से जुड़कर व्यापार और कनेक्टिविटी के नए आयाम खोलेगा।

उन्होंने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की सराहना करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच साझा इतिहास और सभ्यता ने रणनीतिक सहयोग को और अधिक सुदृढ़ किया है। इलाही ने इस अवसर पर ईरानी नागरिकों और भारतीयों के बीच बढ़ते संवाद और व्यापारिक संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

विदाई संदेश में उन्होंने भारतीयों को ईरान आने और वहां के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक अनुभवों का लाभ लेने के लिए आमंत्रित किया। इलाही ने कहा कि दोनों देश प्राकृतिक रूप से मित्र हैं और भविष्य में इन संबंधों को और भी विस्तार देने की अपार संभावनाएं हैं।

भरतपुर में शादी की दावत के लिए ले जा रहे 150 किलो गोमांस के साथ दूल्हा व दो अन्य गिरफ्तार, ट्रैक्टर-ट्राली भी जब्त

(जीएनएस)। जयपुर। राजस्थान के भरतपुर जिले के डीग में पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए दावत के लिए ले जा रहे 150 किलो गोमांस के साथ दूल्हा और उसके पिता समेत दो अन्य व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी मुखबिर द्वारा दी गई सूचना के आधार पर की गई।

सिकरी थाना के अधिकारी सुल्तान सिंह ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि आस मोहम्मद अपने बेटे मौसम की शादी के लिए गोवंशीय पशु का मांस लेकर जा रहा है। मौसम का विवाह केवल तीन दिन बाद होना था, इसलिए मांस की यह खेप शादी की दावत में उपयोग के लिए भेजी जा रही थी। पुलिस ने शनिवार की रात करीब साढ़े 12 बजे मौके पर छापा मारा। आरोपितों को देखकर कुछ लोग भागने की कोशिश करने लगे, लेकिन पुलिस ने उन्हें घेरकर पकड़ लिया। इस दौरान गोमांस ले जाने के लिए इस्तेमाल हो रही ट्रैक्टर-ट्राली भी जब्त की गई।

अधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार तीनों आरोपितों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता और पशु क्रूरता रोधी कानूनों के तहत मामला दर्ज किया गया है। यह कार्रवाई राज्य में गोवंशीय सुरक्षा कानूनों के प्रभावी पालन का उदाहरण मानी जा रही है। पुलिस अब ट्रैक्टर-ट्राली और गोमांस के स्रोत की जांच कर रही है ताकि पूरे मामले की गहनता से पड़ताल की जा सके।

स्थानीय लोग इस गिरफ्तारी को सकारात्मक कदम के रूप में देख रहे हैं, जिससे धार्मिक और सामाजिक भावनाओं का सम्मान सुनिश्चित होता है। इस घटना ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि कानून के उल्लंघन पर किसी को भी छूट नहीं दी जाएगी, चाहे वह शादी की तैयारी ही क्यों न कर रहा हो।

हार का डर या सियासी गणितः क्यों पीछे हटे प्रशांत किशोर, जनसुराज के लिए चुनौती बनी राघोपुर

(जीएनएस)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में प्रशांत किशोर की नई पार्टी जनसुराज 243 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, लेकिन सबसे बड़ी चर्चा यह है कि पार्टी के प्रमुख खुद चुनाव नहीं लड़ रहे। वैशाली जिले की राघोपुर विधानसभा से आरजेडी नेता तेजस्वी यादव को चुनौती देने की घोषणा करने के बावजूद, प्रशांत किशोर ने अचानक चुनाव मैदान से खुद को पीछे ले लिया। इस फैसले ने राजनीतिक गलियारों में सवाल खड़े कर दिए कि आखिर हार का डर था या सियासी गणित की समझदारी।

जानकारों के अनुसार, पिछले तीन सालों से राघोपुर पर नजर रख चुके प्रशांत किशोर ने जमीनी हकीकत भांपने के लिए अपनी टीम तैनात की थी। चुनाव के ऐलान के बाद तेजस्वी यादव पर निशाने साधने के बावजूद, जब उन्होंने स्थानीय जनता का मूड समझा तो समय रहते पीछे हटने का फैसला लिया। उन्होंने तेजस्वी यादव पर तंज कसते हुए कहा कि जैसे राहुल गांधी अमेठी छोड़कर गए थे, वैसे ही तेजस्वी भी राघोपुर से हारेंगे, लेकिन रियलिटी और जनता की प्रतिक्रिया ने उनका फैसला बदल दिया। जनसुराज प्रमुख ने मीडिया के सामने चुनाव न लड़ने की वजह बताते हुए कहा कि समय की मर्यादा और प्रचार की योजना को देखते हुए यह फैसला लिया गया। उनके अनुसार, चुनाव लड़ने पर उन्हें राघोपुर में मात्र 3-4 दिन का प्रचार समय मिलता, जबकि अन्य 30-40 विधानसभा क्षेत्रों में प्रत्याशियों के प्रचार के लिए समय सुनिश्चित करना प्राथमिक था। वरिष्ठ साथियों के विचार-विमर्श के बाद प्रशांत किशोर ने चुनाव न लड़ने का निर्णय लिया। प्रशांत किशोर ने यह भी साफ किया कि उनके फैसले को हार के डर से जोड़कर देखना गलत है। उन्होंने कहा, "अगर डर होता तो बिहार में इस तरह का प्रयास कभी नहीं किया जाता। बिहार में पिछले 25-30 सालों में कोई इस स्तर का प्रयास नहीं कर पाया। मैं किसी से डरता नहीं और किसी के पास इतना पैसा नहीं कि मेरा ईमान खरीदा जा सके।" राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, राघोपुर लालू-राबड़ी के गढ़ के रूप में जाना जाता है। यहां यादव वोट बैंक लगभग 30-35% है, जो बाहरी चेहरे के लिए चुनौतीपूर्ण है। 2015 और 2020 में तेजस्वी यादव की शानदार जीत ने इस सीट की आरजेडी से जुड़ी मजबूती को और पुष्ट किया। यही कारण है कि प्रशांत किशोर ने राघोपुर में चुनाव न लड़ने को समझदारी भरा कदम माना।

इस फैसले के साथ ही जनसुराज की रणनीति साफ हो गई कि पार्टी का फोकस बड़े पैमाने पर प्रचार और व्यापक स्तर पर उम्मीदवारों के समर्थन पर रहेगा। राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि प्रशांत किशोर का यह कदम किसी हार से प्रेरित नहीं, बल्कि चुनावी गणित और रणनीतिक विवेक का परिणाम है।

बिहार विधानसभा चुनाव में जनसुराज की भूमिका और प्रशांत किशोर की रणनीति अब राज्य की राजनीति की दिशा को प्रभावित करने वाली है। यह देखना दिलचस्प होगा कि राघोपुर में उनकी रणनीति और अन्य क्षेत्रों में प्रत्याशियों के प्रचार का असर किस तरह एनडीए और महागठबंधन की लड़ाई को प्रभावित करता है।

एअर इंडिया की स्पेशल फ्लाइट मिलान से भारत लौटाएगी 250 से अधिक भारतीय यात्रियों को, घरवालों संग मनाएंगे दिवाली

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिवाली के अवसर पर 250 से अधिक भारतीयों की खुशी लौट आई है। एअर इंडिया ने मिलान से दिल्ली के लिए विशेष उड़ान का संचालन किया है, ताकि वे अपने घर समय पर पहुंच सकें। यह फ्लाइट विशेष रूप से उन यात्रियों के लिए संचालित की गई है, जो 17 अक्टूबर को ड्रीमलाइनर विमान में तकनीकी खराबी के कारण मिलान में फंस गए थे और अपनी पारंपरिक दिवाली के जश्न में भारत लौट नहीं पा रहे थे।

एअर इंडिया ने रविवार को बयान में कहा कि उन्होंने मिलान में विमान की मरम्मत प्रक्रिया तेज की और सभी आवश्यक अनुमतियां प्राप्त की ताकि अतिरिक्त उड़ान एआइ138डी संचालित हो सके। यह विशेष उड़ान 20 अक्टूबर की सुबह दिल्ली पहुंचेगी और सभी प्रभावित यात्रियों को उनके परिवारों के पास सुरक्षित पहुंचाएगी।

एयरलाइन ने यात्रियों को विकल्प भी दिया कि वे अपनी मौजूदा बुकिंग बनाए रखें या इस अतिरिक्त उड़ान पर स्विच करें। मिलान में फंसे यात्रियों ने तकनीकी खराबी और सुविधाओं की कमी को लेकर सोशल मीडिया पर कई बार अपनी समस्याएं साझा की थीं, जिससे एयरलाइन ने उन्हें तुरंत राहत पहुंचाने की कोशिश की।

यात्रियों के घर लौटने के साथ ही उनके परिवारों में भी खुशी का माहौल है। वे दिवाली की रोशनी और परंपराओं का आनंद अपने घरवालों के साथ मनाएंगे। एयरलाइंस ने यह कदम देशवासियों के त्योहार पर खुशी सुनिश्चित करने और यात्रा की असुविधा को कम करने के लिए उठाया।

विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की तत्कालीन फ्लाइट संचालन और यात्रियों की सुविधा पर ध्यान देने से एयरलाइन की विश्वसनीयता बढ़ती है और भारतीयों के प्रति विश्वास मजबूत होता है। इस दिवाली, मिलान से लौट रहे ये यात्री अपने घर और प्रियजनों के साथ त्योहार की खुशियों में शामिल होंगे, जो तकनीकी असुविधा के बावजूद उत्सव को सफल बनाएगा।

भारत बना रहा छोटे आकार के परमाणु रिएक्टर, कहीं भी स्थापित कर सकेंगे – स्वच्छ ऊर्जा में बड़ा कदम

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत स्वच्छ और सतत ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में एक बड़ा कदम आगे बढ़ा रहा है। देश में 200 मेगावाट तक क्षमता वाले छोटे आकार के परमाणु ऊर्जा रिएक्टर (Small Modular Reactors – SMR) विकसित किए जा रहे हैं, जिन्हें वाणिज्यिक जहाजों से लेकर औद्योगिक कंपनियों के कैप्टिव पावर प्लांट तक कहीं भी स्थापित किया जा सकेगा। यह पहल भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता और हरित ऊर्जा लक्ष्य को साकार करने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि परमाणु ऊर्जा, परमाणु विखंडन के माध्यम से उत्पन्न ऊष्मा से पैदा होती है, जिससे बिजली का उत्पादन किया जाता है। उन्होंने कहा, "ये रिएक्टर सुरक्षित हैं और इनका उपयोग जहाजों, विशेषकर मर्चेंट नेवी के जहाजों में भी किया जा सकता है। साथ ही, इन्हें सीमेंट और स्टील जैसी ऊर्जा खपत वाले उद्योगों के कैप्टिव पावर प्लांट में भी लगाया जा सकेगा।"

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (Bhabha Atomic Research Centre – BARC) के वैज्ञानिक इस दिशा में सक्रिय हैं। वे 55 मेगावाट और 200 मेगावाट क्षमता वाले दो छोटे रिएक्टर विकसित कर रहे हैं, जो न केवल बिजली उत्पादन के लिए बल्कि औद्योगिक ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में भी सक्षम होंगे। वर्तमान में भारत की परमाणु पनडुब्बियां आइएनएस अरिहंत और आइएनएस अरिघात 83 मेगावाट के रिएक्टरों से संचालित होती हैं, जबकि तीसरी पनडुब्बी आइएनएस अरिधमान का परीक्षण चल रहा है। सरकार ने असैन्य परमाणु क्षेत्र में निजी कंपनियों के प्रवेश की अनुमति देने के लिए परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 में संशोधन करने की योजना बनाई है। इस संशोधन के तहत निजी कंपनियों को परमाणु ऊर्जा संयंत्र संचालित करने, परमाणु ईंधन चक्र के प्रारंभिक चरण को संभालने और विदेशी ईंधन खरीदने की अनुमति दी जा सकती है, जिसमें खर्च किए गए ईंधन को मूल देश वापस भेजने का प्रावधान भी शामिल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता को 2047 तक वर्तमान 8.8 गीगावाट से बढ़ाकर 100 गीगावाट करने का लक्ष्य रखा है। विशेषज्ञों का मानना है कि छोटे परमाणु रिएक्टर (SMR) परियोजना देश को ऊर्जा सुरक्षा, औद्योगिक विकास और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में नई दिशा देने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भी भारत को मजबूती प्रदान करेगी।

इस कदम से न केवल स्वच्छ और सुरक्षित ऊर्जा की आपूर्ति सुनिश्चित होगी, बल्कि भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता और औद्योगिक उत्पादकता भी बढ़ेगी। विशेषज्ञों का कहना है कि छोटे आकार के रिएक्टर कहीं भी स्थापित किए जा सकने के कारण यह ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में भी बिजली पहुंचाने का विकल्प प्रदान करेंगे, जिससे देश में ऊर्जा असमानता कम होगी और सतत विकास को बल मिलेगा।

बंगाल में फर्जी पासपोर्ट रैकेट का खुलासा, 400 बांग्लादेशियों को बनाया गया भारतीय नागरिक

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल में अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को भारतीय पहचान दिलाकर फर्जी पासपोर्ट जारी करने वाले एक बड़े रैकेट का पर्दाफाश हुआ है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच में सामने आया है कि अब तक करीब 400 बांग्लादेशी नागरिकों को इस नेटवर्क के जरिए भारतीय पासपोर्ट जारी किए जा चुके हैं। इस पूरे गिरोह के तार राज्य के कई जिलों से लेकर बांग्लादेश और पाकिस्तान तक फैले हुए हैं। ईडी ने बताया कि यह रैकेट नदिया जिले के चकदाहा क्षेत्र से संचालित हो रहा था। इस नेटवर्क का मुख्य संचालक इंदु भूषण नामक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया है। वह पाकिस्तानी नागरिक आज़ाद मलिक के साथ मिलकर यह पूरा ऑपरेशन चला रहा था। आज़ाद मलिक को पहले ही इसी मामले में गिरफ्तार किया जा चुका है। जांच एजेंसी ने खुलासा किया है कि इन दोनों ने फर्जी पहचान दस्तावेज़ों के सहारे बांग्लादेशियों के लिए भारतीय पासपोर्ट बनवाने का संगठित तंत्र तैयार किया था। ईडी के अनुसार, इस रैकेट के जरिए करीब 2 करोड़ रुपए से अधिक का वित्तीय लेन-देन हुआ है। इंदु भूषण ने चकदाहा और आसपास के इलाकों में साइबर कैफे और डेस्कटॉप किराए पर लेकर नकली दस्तावेज़ों का निर्माण किया। उसने लगभग 300 से ज्यादा पासपोर्ट तैयार करवाए, जिनके लिए प्रति पासपोर्ट औसतन 5 लाख रुपए तक वसूले जाते थे। यह रकम हवाला चैनलों के माध्यम से आज़ाद मलिक तक पहुंचाई जाती थी। जांच में खुलासा हुआ है कि पासपोर्ट जारी करने से पहले इन बांग्लादेशी नागरिकों के लिए पहले आधार कार्ड और पैन कार्ड फर्जी नामों पर तैयार किए जाते थे। इसके बाद फर्जी पते के आधार पर उन्हें मतदाता सूची में शामिल कराया जाता था। पासपोर्ट आवेदन के समय इन दस्तावेजों का उपयोग किया जाता और स्थानीय डाक विभाग के कुछ कर्मचारियों की मिलीभगत से पासपोर्ट घर तक पहुंचा दिए जाते थे। ईडी ने कोलकाता स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय से संबंधित सभी रिकॉर्ड और इलेक्ट्रॉनिक डेटा जब्त कर लिए हैं। शुरुआती जांच में कई संदिग्ध सरकारी कर्मचारियों की भूमिका पर भी संदेह जताया गया है। ईडी अधिकारियों के अनुसार, कुछ आवेदनों में सत्यापन प्रक्रिया जानबूझकर अधूरी छोड़ दी गई थी ताकि पासपोर्ट तेजी से जारी किए जा सकें। शनिवार को इंदु भूषण को विशेष अदालत में पेश किया गया, जहाँ से उसे 27 अक्टूबर तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। ईडी इस मामले में अब उन नेटवर्कों की भी जांच कर रही है जो इन फर्जी पासपोर्ट का इस्तेमाल कर अन्य देशों में अवैध प्रवास या धनशोधन के लिए करते थे। जांच एजेंसी का कहना है कि यह केवल राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मामला नहीं, बल्कि सीमा पार अपराध और पहचान तंत्र की विश्वसनीयता पर भी गहरा सवाल है। ईडी ने संकेत दिया है कि आने वाले दिनों में कई और गिरफ्तारियाँ संभव हैं।

पाकिस्तान में नाबालिग हिंदू लड़की से जबरन धर्मांतरण और शादी, फिर उभरा अल्पसंख्यकों पर अत्याचार का मुद्दा

(जीएनएस)। सिंध प्रांत, पाकिस्तान। पाकिस्तान में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ एक और दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। सिंध के एक गांव में 15 वर्षीय गूंगी-बहरी हिंदू लड़की का अपहरण कर न केवल उसका जबरन धर्मांतरण कराया गया, बल्कि उसकी शादी भी एक उम्रदराज मुस्लिम व्यक्ति से कर दी गई, जिसकी पहले से सात बेटियां हैं। लड़की के परिवार ने बताया कि वह करीब दस दिन से लापता थी और अचानक जब पुलिस ने उसे "बरामद" किया, तो उसके पास इस्लाम में धर्म परिवर्तन का प्रमाणपत्र और शादी का निकाहनामा मिला।

लड़की के पिता ने इस पूरे मामले को मानवता के खिलाफ बताया और कहा कि उनकी नाबालिग, बहरी और गूंगी बेटी अपनी मर्जी से न तो धर्म बदल सकती है और न ही किसी से शादी कर सकती है। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि जिस व्यक्ति से उसकी शादी कराई गई, वह नशे के कारोबार से जुड़ा है और पहले भी कई अपराधों में संलिप्त रहा है।

स्थानीय संगठन दारावर इत्तेहाद ने इस घटना को अपहरण और यौन शोषण का मामला बताया है। संगठन ने आरोप लगाया कि पुलिस ने परिवार की शिकायत के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की, बल्कि आरोपी पक्ष को संरक्षण दिया। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने इस घटना की निंदा करते हुए कहा है कि पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों की लड़कियों को जबरन धर्मांतरण और शादी के लिए निशाना बनाना अब एक "सामाजिक संरचना" का हिस्सा बन चुका है।

मानवाधिकार संगठनों के अनुसार, पाकिस्तान में हिंदू आबादी लगभग 1.2 प्रतिशत है, यानी करीब 19.6 लाख लोग, जिनमें से अधिकांश सिंध प्रांत के ग्रामीण इलाकों में रहते हैं। इन इलाकों में जबरन धर्मांतरण के मामलों की संख्या पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ी है। ह्यूमन राइट्स कमीशन ऑफ पाकिस्तान (HRCP) की 2024-25 की रिपोर्ट "Streets of Fear: Freedom of Religion or Belief" के अनुसार, केवल पिछले वर्ष में ही धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों की लगभग 150 से अधिक लड़कियों का अपहरण, बलात्कार और जबरन धर्मांतरण हुआ। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि पंजाब और सिंध प्रांतों में पुलिस की भूमिका कई बार पक्षपाती रही है। कई मामलों में अदालतों ने यह कहकर शिकायतें खारिज कर दीं कि लड़कियां "अपनी मर्जी से" इस्लाम स्वीकार कर चुकी हैं, जबकि उनकी उम्र 16 वर्ष से कम थी।

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार समूहों ने संयुक्त राष्ट्र और पाकिस्तान सरकार से मांग की है कि वह जबरन धर्मांतरण और बाल विवाह विरोधी कानूनों को सख्ती से लागू करे और दोषियों को उदाहरणात्मक सजा दे। वहीं, पाकिस्तान सरकार अब तक इस तरह की घटनाओं पर औपचारिक प्रतिक्रिया देने से बचती रही है।

इस घटना के बाद एक बार फिर से पाकिस्तान में हिंदू और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर सवाल उठ गए हैं। परिवार न्याय की गुहार लगा रहा है, जबकि स्थानीय संगठन इस केस को अदालत में ले जाने की तैयारी कर रहे हैं। इस बीच, लड़की अब सरकारी संरक्षण गृह में रखी गई है, लेकिन उसका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य गंभीर रूप से प्रभावित बताया जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक आदेश: गरीब विचाराधीन कैदियों की जमानत प्रक्रिया अब होगी आसान, डीएलएसए करेगा मदद

(जीएनएस)। नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर विचाराधीन कैदियों के लिए जमानत प्रक्रिया को आसान बनाने वाला ऐतिहासिक आदेश पारित किया है। अब किसी गरीब कैदी के पास जमानत के लिए आवश्यक धनराशि नहीं होने पर भी उसकी रिहाई में कोई बाधा नहीं आएगी। अदालत ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए) को अधिक अधिकार देते हुए कहा है कि यदि कैदी के पास जमानत के लिए पैसा उपलब्ध नहीं है, तो डीएलएसए उसकी ओर से अधिकतम एक लाख रुपये तक की राशि जमानत के लिए जमा करवा सकता है। यह निर्णय गरीब कैदियों के अधिकार और न्याय सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने इस मामले की सुनवाई की। इस दौरान अतिरिक्त सालिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी और वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने भी अपने सुझाव प्रस्तुत किए। कोर्ट ने पिछली एसओपी (मानक संचालन प्रक्रिया) में संशोधन करते हुए तय किया कि प्रत्येक जिले में एक अधिकार प्राप्त समिति का गठन किया जाएगा। इस समिति में जिला कलेक्टर या जिला मजिस्ट्रेट द्वारा नामित अधिकारी, डीएलएसए सचिव, पुलिस अधीक्षक, संबंधित जेल के अधीक्षक/उपाधीक्षक और प्रभारी जज शामिल होंगे। डीएलएसए सचिव इस समिति के संयोजक होंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि गरीब कैदियों को उनके अधिकार समय पर मिलें।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि किसी गरीब विचाराधीन कैदी को जमानत आदेश के सात दिनों के भीतर जेल से रिहा नहीं किया जाता, तो जेल अधिकारी डीएलएसए सचिव को सूचित करेंगे। सूचना मिलने के बाद डीएलएसए सचिव जांच करेंगे कि कैदी के खाते में जमानत राशि उपलब्ध है या नहीं। यदि राशि उपलब्ध नहीं है, तो पांच दिनों के भीतर डीएलएसए को इसके लिए अनुरोध भेजा जाएगा और जिला स्तरीय अधिकार प्राप्त समिति रिपोर्ट मिलने की तारीख से पांच दिनों के भीतर जमानत के लिए धनराशि जारी करेगी।

इसके अतिरिक्त, सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया कि डीएलईसी (जिला स्तरीय अधिकार प्राप्त समिति) प्रत्येक माह के पहले और तीसरे सोमवार को बैठक करेगी और डीएलएसए द्वारा सुझाए गए मामलों पर विचार करेगी। जिन मामलों में समिति यह सिफारिश करेगी कि गरीब विचाराधीन कैदियों को 'गरीब कैदियों को सहायता योजना' के तहत वित्तीय सहायता दी जाए, वहां प्रत्येक कैदी के लिए 50,000 रुपये तक की धनराशि जिला समिति के निर्णय के पांच दिनों के भीतर सावधि जमा या अन्य विधि से उपलब्ध कराई जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि यदि कैदी बरी या दोषी ठहराया जाता है, तो ट्रायल कोर्ट उचित आदेश पारित कर सकता है ताकि जमानत राशि सरकार के खाते में वापस आ सके। इसके अलावा, यदि जरूरत पड़े, तो अधिकार प्राप्त समिति अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करके 50,000 रुपये से अधिक और एक लाख रुपये तक की राशि भी भुगतान कर सकती है।

इस फैसले से गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर कैदियों के लिए जमानत की प्रक्रिया अब अधिक सरल और त्वरित होगी। उन्हें आर्थिक कठिनाइयों के कारण लंबा समय जेल में रहने की बाधा नहीं झेलनी पड़ेगी। सुप्रीम कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 26 नवंबर के लिए निर्धारित की है और केंद्र सरकार को निर्देश दिया है कि वह अपनी योजना में आवश्यक संशोधन करते हुए संशोधित एसओपी जारी करे।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह निर्णय न्यायपालिका की सामाजिक संवेदनशीलता और कमजोर वर्ग के अधिकारों की रक्षा का प्रतीक है। इससे न केवल न्याय व्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि गरीब और वंचित कैदियों के लिए कानूनी प्रक्रिया में पहुंच आसान होगी। यह कदम भारत में न्याय की सुलभता और गरीबों के अधिकारों की सुरक्षा की दिशा में एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है।